हरिभूमि

झज्जर-बहादुरगढ़ भूमि

रोहतक, रविवार, 20 जुलाई 2025

11 निलोठी स्कूल में नाटक के माध्यम से किया जागरूक

12 भ्रष्टाचार के कारण आधार खो रहीं सड़कें

खबर संक्षेप

बहादुरगढ़। ट्रांसफार्मर में टक्कर मारने के बाद मौके पर खड़ा ट्रैक्टर।

ट्रैक्टर ने ट्रांसफार्मर में मारी टक्कर, बिजली ठप

बहादुरगढ़। शहर के शक्ति नगर से सेक्टर-13 तक नहर किनारे रास्ते पर लगे ट्रांसफार्मर में तेज रफ्तार ट्रैक्टर अनियंत्रित होकर टकरा गया। इससे बिजली का पोल क्षतिग्रस्त हो गया और बड़ा हादसा होने से बच गया। शनिवार को शक्ति नगर से आगे नहर के साथ देव नगर की गली नंबर-5 के पीछे बिजली ट्रांसफार्मर में कूड़ा उठाने वाले ट्रेक्टर ने टक्कर मार दी। इससे ट्रांसफार्मर का एच पोल टूट गया। साथ ही इलाके की विद्युत आपूर्ति ठप हो गई। गनीमत यह रही कि ट्रैक्टर चालक बच गया। सूचना मिलने पर बिजली निगम की टीम भी मौके पर पहुंच गई और मरम्मत कार्य में जुट गई।

रख-रखाव के चलते डेढ़ घंटे रहेगा बिजली कट

झज्जर। रविवार को 33 केवी ओल्ड पॉवर हाऊस पर रख रखाव कार्य किया जाएगा जिस कारण शहर के कुछ क्षेत्रों में बिजली सप्लाई व्यवस्था सुबह सात बजे साढ़े आठ बजे तक बंद रहेगी। बिजली निगम के एसडीओ सौरभ ने बताया कि कार्य पूर्ण होने उपरांत बिजली आपूर्ति सामान्य कर दी जाएगी। रख-रखाव कार्य के कारण प्रभावित होने वाले क्षेत्रों में शहर का पुराना बस स्टैंड रोड, भगत सिंह चौक, छिक्कारा चौक, धौड़ चौक, नया बस स्टैंड, रेलवे स्टेशन रोड, ग्वालिसन रोड, मॉडल टाऊन, आर्य नगर, कोसली रोड, पुरानी तहसील रोड, जलघर व नागरिक अस्पताल शामिल है।

यशपाल ने स्वास्थ्य मंत्री आरती से की मुलाकात

बहादुरगढ़। यशपाल हिंदुस्तानी ने स्वास्थ्य मंत्री आरती राव से शिष्टाचार भेंट की और भगवान श्री खाटू श्याम की तस्वीर भेंट की। उन्होंने बहादुरगढ़ नागरिक अस्पताल में मिल रही स्वास्थ्य सुविधाओं में इजाफा करवाने की मांग की।

सीईटी की परीक्षा भी गृह जिले में ही होः अनिल

बहादुरगढ़। गांव छारा के पंचायत सदस्य मास्टर अनिल दलाल ने नीट की परीक्षा की भांति ही सीईटी की परीक्षा भी गृह जिले में करवाने की मांग की है। उनके अनुसार हरियाणा सीईटी परीक्षा में अधिकांश झज्जर जिले के परीक्षार्थी फरीदाबाद जाएंगे। करीब 100 किलोमीटर दूर परीक्षा देने भेजना न्यायसंगत नहीं कहा जा सकता।

सुंदरकांड पाठ एवं प्रवचन आज होगा

महंत खुशहाल दास महाराज।

झज्जर। सत जिंदा कल्याणा सेवा समिति झज्जर द्वारा पंजाबी धर्मशाला में श्री सुंदरकांड पाठ का आयोजन किया जाएगा। झंग सभा के प्रधान कृष्ण लाल शर्मा, समिति के प्रधान हरीश पाहवा ने बताया कि श्रीबाला जी महाराज की असीम अनुकम्पा से सत जिंदा कल्याणा आश्रम कलानौर के गद्दीनशीन महंत श्री 1008 खुशहाल दास महाराज रविवार सुबह साढ़े नौ बजे से सुंदरकांड के उपरांत प्रभु इच्छा तक प्रवचनों की अमृत वर्षा करेंगे। उन्होंने कहा कि ज्यादा से ज्यादा संख्या में पंहुचकर सुंदरकांड पाठ, महाराज के प्रवचन सुने और आशीर्वाद ग्रहण करें।

झज्जर। प्रशिक्षण शिविर के समापन पर नव पदोन्नत प्राचार्य विभागीय अधिकारियों के साथ। फोटो: हरिभूमि

डीईओ ने नव पदोन्नत प्राचार्यों को प्रदान किए प्रशिक्षण प्रमाण–पत्र

झज्जर। जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान माछरौली में नव-पदोन्नत प्राचार्यों के लिए चलाया जा रहा बारह दिवसीय प्रशिक्षण शनिवार को संपन्न हो गया। कार्यक्रम का उद्देश्य नव पदोन्नत प्राचार्यों को उनकी जिम्मेदारियों से अवगत कराना और विद्यालय प्रबंधन में उनकी दक्षता को बढ़ाना रहा। इस प्रशिक्षण में एआई, टीम बील्डिंग, यू डाइस, समय प्रबंधन, इमोशनल इंटेलिजेंस, आरटीआई, एसबीए, स्कूल डेवलेपमेंट प्लान, साइबर सेफ्टी, 21वीं सदी की स्किल, योगा, एसीआर, अपार, जैम पोर्टल, हरियाणा सिविल सर्विस रूल-16 लीव, नियुक्ति, पेंशन, अलाउंस, मेडिकल रीइंबर्समेंट, कंडक्ट रूल, जीपीएफ, पनिशमेंट एंड अपील, जनरल रूल, पे फिक्सेशन एंड रिवाइज रूल, एमआईएस, ई-सैलरी, पीएफएमएस आदि विषयों पर विस्तार से जानकारी दी गई। कार्यक्रम संयोजक सुनील कुमार ने बताया कि यह 12 दिवसीय प्रशिक्षण प्राचार्यों के लिए उनके व्यावसायिक जीवन को कारगार बनाने में सक्षम होगा। वे निपुणता से अपने पद की जिम्मेदारी का निर्वहन कर सकेंगे। जिला शिक्षा अधिकारी राजेश कुमार ने सभी नव पदोन्नत प्राचार्यों को संबोधित करते हुए कहा कि डाइट द्वारा एक से एक अच्छे एक्सपर्ट बुला कर आप सभी को विभिन्न विषयों से अवगत करवाया गया है। उन्होंने कहा कि उनके द्वारा बच्चों के हितों को ध्यान में रखकर किया गया कार्य ही राष्ट्र निर्माण में मददगार साबित होगा। इस मौके पर चीफ अकाउंट ऑफिसर राजेश कुमार मनोचा, अकाउंट ऑफिसर राजेश मलिक, अकाउंट ऑफिसर हरीश दुग्गल, प्राचार्य धर्मवीर यादव, डाइट से भूपेंद्र रोज, डॉक्टर निर्मल, डॉक्टर मंगल प्रसाद, डॉक्टर मनोज कौशिक, विनोद कुमारी, सोनिया, रेनू और प्रवीण सहित अन्य उपस्थित रहे।

आरोपी ने साइबर अपराधी को अपना खाता दो लाख के लालच में दिया

75 लाख के साइबर फ्रॉड मामले में एक आरोपी मुंबई से गिरफ्तार

आरोपी के खाते में पाया गया करोड़ों का लेनदेन। आरोपी को स्थानीय आदालत ने न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया।

हरिभूमि न्यूज ⏭ झज्जर

साइबर थाना की पुलिस टीम ने 75 लाख रुपये से अधिक की साइबर ठगी करने के मामले में एक आरोपी को गिरफ्तार किया गया है। साइबर थाना प्रभारी इंस्पेक्टर सोमबीर ने बताया कि सोनीपत निवासी एक व्यक्ति जो एक प्लांट में नौकरी करता है। जिसके साथ रुपये के इन्वेस्टमेंट करने के नाम पर 75 लाख से ज्यादा रुपए की साइबर ठगी हुई है। पुलिस को दी शिकायत में पीड़ित व्यक्ति ने बताया कि मेरा खाता एक बैंक में है जिसमें मुझे इन्वेस्टमेंट संबंधित मेल आते रहते हैं। एक दिन मुझे टेलीग्राम के माध्यम से एक लिंक मिला जब मैंने लिंक को क्लिक किया तो मुझे एक व्हाट्सएप ग्रुप से जोड़ दिया गया।

झज्जर। पकड़ा गया आरोपी पुलिस टीम के साथ। फोटो: हरिभूमि

फोन में एप्लीकेशन डाउनलोड करवाया

ग्रुप में जुड़ने के बाद एक एप्लीकेशन को मेरे फोन में डाउनलोड करवाया गया। जिसकी जानकारी ईमेल या एसएमएस के माध्यम से नहीं आती थी। जिस एप पर सर्विस टैब पर क्लिक करने के बाद अपना नाम और फोन नंबर डालने पर जिन खातों में पैसे डालना होते थे उनकी डिटेल आ जाती थी। जिनके कहे अनुसार मैंने उनके अलग-अलग खातों में 75 लाख से ज्यादा पैसे जमा करवा दिए। जब उनसे अपने पैसे मांगे तो उन्होंने और पैसे जमा करवाने के लिए कहा जिस पर मुझे शक हुआ कि मेरे साथ साइबर फ्रॉड हुआ है। जिस पर कार्रवाई करते हुए आरोपी विजय को मुंबई से पकड़ा गया।

पुलिस ने स्थानीय अदालत में पेश किया

पकड़े गए आरोपी के खिलाफ नियमानुसार कार्रवाई करते हुए स्थानीय अदालत में पेश किया गया। जहां से आरोपी को अदालत के आदेशानुसार न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया। उन्होंने बताया कि आरोपी विजय ने दो लाख रुपये के लालच में साइबर अपराधी को अपना खाता नंबर दे रखा था। आरोपी के खाते में करोड़ों रुपये का लेनदेन होना पाया गया है।

झज्जर। बैठक के दौरान दिशा निर्देश देतां पुलिस आयुक्त डॉक्टर राजश्री सिंह।

हथियारों का प्रदर्शन करने वालों पर करें सख्त कार्रवाईः राजश्री

हरिभूमि न्यूज ⏭ झज्जर

शनिवार को जिला पुलिस मुख्यालय पर पुलिस आयुक्त डॉक्टर राजश्री सिंह की अध्यक्षता में क्राइम मीटिंग का आयोजन किया गया। जिसमें पुलिस आयुक्त ने थानों में आने वाले फरियादियों के साथ सम्मान पूर्वक व्यवहार करने, कांवड़ यात्रा के दौरान ड्यूटी मुस्तैदी से करने, मंचलो पर कार्रवाई करने, सोशल मीडिया पर हथियारों के प्रदर्शन व क्रिमिनलों के अकाउंट को फॉलो करने वालों पर भी कार्रवाई करने के दिए।

उन्होंने बताया कि आमतौर पर एक दूसरे के देखा देखी में कई युवा हथियार लेकर उसे लहराते हुए अलग-अलग पोज में फोटो बनाकर सोशल मीडिया पर अपलोड कर देते हैं जिससे समाज में बहुत गलत संदेश जाता है तथा समाज में अपराधिक प्रवृत्ति को बढ़ावा मिलता है। इस प्रकार का गैर कानूनी कार्य करने में जिस व्यक्ति का हथियार होता है और जो फोटो अपलोड करता है वह दोनों ही दोषी होंगे और उनके खिलाफ नियम अनुसार कानूनी कार्रवाई अमल मे लाई जाए। वही उन्होंने क्रिमिनल्स के सोशल मीडिया अकाउंट को फॉलो करने वाले युवाओं के परिजनों को भी आगाह करने के निर्देश दिए गए हैं। पुलिस द्वारा सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर प्रत्येक गतिविधि पर कड़ी निगाह रखी जा रही है। गैंगस्टर के अकाउंट को चलाने वाले उनके संदेशों का प्रचार प्रसार करने वाले, उनको फॉलो करने वाले, उनकी पोस्ट को लाइक, शेयर करने अथवा कमेंट करने वाले लोगों पर कार्रवाई करने के लिए पुलिस द्वारा विशेष कार्य योजना तैयार की गई है।

सीएस फाउंडेशन परीक्षा में संस्कारम की इशिका और अंकिता ने पाई सफलता

हरिभूमि न्यूज ⏭ झज्जर

संस्कारम पब्लिक स्कूल की दो छात्राओं ने सीएस फाउंडेशन परीक्षा में सफलता हासिल की है। संस्कारम ग्रुप ऑफ स्कूल्स के चेयरमैन डॉक्टर महिपाल ने बताया कि इंस्टीट्यूट ऑफ कंपनी सेक्रेटरीज ऑफ इंडिया द्वारा घोषित परीक्षा परिणामों में उनके स्कूल की छात्रा इशिका यादव व अंकिता सिंह ने सफलता हासिल कर अपने अभिभावकों व संस्थान का नाम रोशन किया है। इशिका ने बताया कि उसने सत्र के शुरुआत से ही तैयारी शुरू कर दी थी। जो कुछ भी स्कूल में पढ़ाया जाता था, वह उसे उसी दिन रिवाइज करती थी। उसने सभी विषयों को बराबर महत्व दिया और जो विषय उसे मुश्किल लगते वह उसके अलग नोट्स बना लेती थी। अंकिता सिंह ने कहा कि सीएस में स्कूल से तैयारी के साथ-साथ सेल्फ स्टडी पर फोकस किया। अध्यापकों की मदद से हर सब्जेक्ट के शॉर्ट नोट्स बनाए, जिससे एग्जाम के एक दिन पहले पूरा सिलेबस रिवाइज हो सके। दोनों छात्राओं की इस उपलब्धि पर संस्कारम ग्रुप ऑफ स्कूल्स के चेयरमैन डॉक्टर महिपाल ने अध्यापकों व अभिभावकों को बधाई देते हुए उत्तीर्ण छात्राओं के उज्ज्वल भविष्य की कामना की है।

झज्जर। शिक्षकों के साथ उपस्थित सीएस फाउंडेशन परीक्षा में उत्तीर्ण छात्राएं।

उधार मांगा तो दुकानदार पर किया हमला

■ पूरी वारदात सीसीटीवी कैमरे में रिकॉर्ड हो गई

हरिभूमि न्यूज ⏭ बहादुरगढ़

शहर की बैंक कॉलोनी में एक दुकानदार द्वारा महिला ग्राहक से उधारी मांगना भारी पड़ गया। उधार के पैसे चुकाने की बजाय महिला ग्राहक के परिजनों ने पहले दिन में दुकानदार से झगड़ा किया। फिर रात में दुकानदार और उसके मित्रों पर भयंकर हमला बोल दिया। यह पूरी वारदात सीसीटीवी कैमरे में रिकॉर्ड हो गई। पुलिस ने शिकायत के आधार पर केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी। नारायण ने बैंक कॉलोनी में लक्ष्मी डेरी के नाम से परचून की दुकान कर रखी है। उसी कॉलोनी में रहने वाली दीपा नाम की औरत का उसकी दुकान पर उधार खाता चलता है। नारायण ने जब 8 हजार 524 रुपए की उधार चुकता करने को कहा तो महिला का लड़का और पति दुकान पर आए बहस करने लगे थे। अजीत निवासी बैंक कॉलोनी ने पुलिस में शिकायत दी है। वीरवार 17 जुलाई की रात करीब 11 बजे वह नारायण की दुकान पर सामान लेने गया था। रात का समय और बारिश होने के कारण उसके दोस्त नारायण ने सामान देने के बाद गाडी में घर छोड़ने की पेशकश की। नारायण का रिश्तेदार सुमित दुकान बढ़ाने लगा। वे गाड़ी में बैठे ही थे कि तभी 7-8 आदमी अपने हाथों में लोहे की रॉड और डंडे लेकर आए। उन्होंने गाड़ी का रास्ता रोका और हमला कर दिया। गाड़ी के सभी शीशे तोड़ दिए और जान से मारने की धमकी दी। काफी मारपीट करने के बाद वे मौके से भाग गए। घायल नारायण व अजीत को ईलाज के लिए मिशन अस्पताल लाया गया। पुलिस ने शिकायत के आधार पर आरोपियों के विरुद्ध केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

बहादुरगढ़। सीसीटीवी में कार पर हमला करते नजर आ रहे आरोपी। फोटो: हरिभूमि

स्नातक कक्षाओं की खाली सीटें भरने के लिए ओपन काउंसलिंग जारी

हरिभूमि न्यूज ⏭ झज्जर

विभिन्न कॉलेजों की बीए, बीएससी, बीकॉम, बीसीए और बीबीए आदि स्नातक कक्षाओं की खाली सीटों को भरने के लिए ओपन काउंसलिंग चल रही है। राजकीय स्नातकोत्तर नेहरू महाविद्यालय के मीडिया प्रभारी डॉक्टर अमित भारद्वाज ने बताया कि जिन विद्यार्थियों ने अभी तक दाखिला नहीं लिया है, वे ऑनलाइन आवेदन करके अपने सभी दस्तावेजों के साथ ओपन काउंसलिंग में भाग ले सकते हैं। स्नातक कक्षाओं की ओपन काउंसलिंग 24 जुलाई तक चलेगी।

स्नातक कक्षाओं में अब तक 518 के दाखिले

डॉक्टर अमित भारद्वाज ने बताया कि नेहरू कॉलेज की विभिन्न स्नातक कक्षाओं में अब तक 518 विद्यार्थियों ने दाखिला लिया है। इनमें बीए की 480 सीटों पर 293, बीकॉम की 140 सीटों पर 27, बीएससी फिजिकल साइंस की 300 सीटों पर 26, बीएससी लाइफ साइंस की 80 सीटों पर 38, बीबीए की 80 सीटों पर 49, बीसीए की 80 सीटों पर 67 और बीएससी गणित की 40 सीटों पर 18 विद्यार्थियों ने दाखिला लिया है। इस प्रकार बीए की 187, बीकॉम की 113 , बीएससी फिजिकल साइंस की 274, बीएससी लाइफ साइंस की 42 , बीबीए की 31, बीसीए की 13 और बीएससी गणित की 22 सीटें खाली हैं।

स्नातकोत्तर कक्षाओं के लिए भी आवेदन शुरू

डॉक्टर अमित भारद्वाज ने बताया कि एमए, एमएससी, एमकॉम आदि स्नातकोत्तर कक्षाओं के दाखिलों के लिए आवेदन शुरू हो गए हैं। विद्यार्थी उच्चतर शिक्षा विभाग के एडमिशन पोर्टल पर आवेदन कर सकते हैं। अभी तक अंतिम तिथि और मेरिट लिस्ट जारी होने की तिथि घोषित नहीं की गई है। दाखिला स्नातक कक्षा में प्राप्त अंकों में आधार पर मेरिट से होगा।

मिशन एडमीशन

राजकीय महिला महाविद्यालय बहादुरगढ़ में 2 नए कोर्स शुरू

बहादुरगढ़। बालौर रोड पर स्थित राजकीय महिला महाविद्यालय। फोटो: हरिभूमि

बहादुरगढ़। राजकीय महिला महाविद्यालय बहादुरगढ़ में शैक्षणिक सत्र 2025-26 से दो नए स्नातकोत्तर कोर्स आरंभ हुए हैं। पहली बार एमए भूगोल व एमए मनोविज्ञान में प्रवेश के लिए ऑनलाइन आवेदन आमंत्रित किए गए हैं। कॉलेज की प्रवक्ता डॉ. सुनीता छिल्लर के अनुसार प्रत्येक विषय में कुल 60 सीटें उपलब्ध हैं। इन पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए इच्छुक छात्राएं ऑनलाइन माध्यम से आवेदन कर सकती हैं। उन्होंने कहा कि स्थानीय छात्राओं की उच्च शिक्षा की दिशा में यह एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। उन्होंने कहा कि अधिक जानकारी या आवेदन के लिए वेबसाइट अथवा कॉलेज में संपर्क कर सकते हैं।

एक पेड़ की तरह है निवेश, अभी लगाएंगे तो भविष्य में देगा छाया

● निवेश की यात्रा शुरू कर रहे हैं तो जान लें कुछ जरूरी नियम● सबसे पहले निवेश के लिए लक्ष्य लेकर चलें और रुकें नहीं● हमेशा लंबी अवधि के लिए निवेश करें और उसे हर साल बढ़ाते जाएं

निवेश मंत्रा
विनोद कौशिक

निवेश एक पेड़ की तरह है। यदि आप इस समय निवेश रूपी पौधा रोपेंगे तो यह बुढ़ापे में आपको छाया देगा और भविष्य को सुरक्षित रखेगा। अगर आप भी अपनी निवेश यात्रा शुरू करने जा रहे हैं या कर चुके हैं तो कुछ नियमों को अपने जीवन में उतार लें। इससे आप आसानी से अपने सपने को पूरा कर सकेंगे। अपने गोल पूरे कर सकेंगे। सबने इन्वेस्टमेंट यानी निवेश शब्द तो बहुत बार सुना होगा। चाहे परिवार की बातचीत, समाचार अपडेट या रोजमर्रा के जीवन में भी, लेकिन क्या आप कभी यह सोचने से रोके हैं कि इसका क्या मतलब है? सबसे सरल अर्थ में, इन्वेस्टमेंट आज पैसे, समय या ऊर्जा देने के बारे में है, आशा है कि यह भविष्य में कुछ और बढ़ेगा। कल्पना करें कि यह एक पौधा रोपने की तरह है, आप कोशिश करते हैं, इसे सावधानी से पोषण करते हैं, यह जानकर कि किसी दिन यह आपको छाया, फल या शायद कुछ सुंदरता भी प्रदान करेगा। यही इन्वेस्टमेंट यानी निवेश का मंत्र है। हमेशा लंबी अवधि के लिए निवेश करें और उसे हर साल बढ़ाते जाएं।

निवेश का महत्व

- इन्वेस्टमेंट आपके पैसे को महंगाई से बचा सकता है।
- आपको आय अर्जित करने में मदद कर सकता है।
- आपको अपने लॉन्ग-टर्म लक्ष्यों के करीब ला सकता है।
- समय के साथ अपनी कैश वैल्यू खोने के बजाय, इन्वेस्टमेंट आपको रियल वेल्थ

बनाने में मदद कर सकता है

- कंपाउंडिंग होती है-जहां आपका रिटर्न गुणा होता है और समय के साथ अपना रिटर्न जनरेट करना शुरू करता है।
- इसलिए, चाहे रिटायरमेंट के लिए बचत हो या उस ड्रीम वेकेशन, इन्वेस्टमेंट आपके सभी वर्तमान और भविष्य के लक्ष्यों को आसानी से पूरा कर सकता है।

निवेश से पहले यह जान लें

जोखिम सहिष्णुता: आप अपने इन्वेस्टमेंट के कुछ या सभी को खोने के विचार से कितना आरामदायक हैं?
समय सीमा: क्या आप शॉर्ट टर्म या लॉन्ग टर्म के लिए इन्वेस्ट करना चाहते हैं?
फाइनेंशियल लक्ष्य: आप अपने इन्वेस्टमेंट के माध्यम से क्या प्राप्त करना चाहते हैं?
विविधता: विभिन्न क्षेत्रों में अपने इन्वेस्टमेंट को फैलाकर जोखिम को मैनेज करने में मदद मिल सकती है, जैसे कि आपके सभी अंडे एक ही टोकरी में न डालें।

इसलिए करें इन्वेस्टमेंट

महंगाई से सुरक्षा: इन्वेस्टमेंट अक्सर महंगाई की तुलना में तेजी से बढ़ते हैं, जिससे आपके पैसे की वैल्यू को सुरक्षित रखा जाता है।
पैसिव आय जनरेट करें: कुछ इन्वेस्टमेंट, जैसे डिविडेंड-भुगतान स्टॉक, नियमित कैश फ्लो प्रदान कर सकते हैं।
फाइनेंशियल लक्ष्य प्राप्त करें: इन्वेस्टमेंट आपको बड़े जीवन की घटनाओं, जैसे घर खरीदना या आराम से रिटायर होना आदि के लिए बचत करने में मदद करता है। इन्वेस्ट करना शुरू करना कभी भी बहुत जल्दी नहीं है, जितनी जल्दी आप शुरू करते हैं, कंपाउंडिंग का लाभ मिलेगा।

आखिर क्या है निवेश

निवेश एक प्रक्रिया है, जिसमें व्यक्ति या संगठन अपने पैसे को विभिन्न प्रकार की संपत्तियों या वित्तीय साधनों में लगाते हैं, जिससे उन्हें भविष्य में आय या लाभ प्राप्त हो सके। निवेश का उद्देश्य आमतौर पर अपने पैसे को बढ़ाना, आय अर्जित करना, या भविष्य के लिए बचत करना होता है। निवेश एक एसेट और/या एक आइटम है जो या तो अप्रिशिएशन प्राप्त करने या इनकम जनरेट करने के लिए अर्जित किया जाता है। इन्वेस्टमेंट में वृद्धि एक निश्चित अवधि में एसेट/आईटम के मूल्य में वृद्धि है। इससे स्टॉक खरीदना, रियल एस्टेट में इन्वेस्ट करना, गोल्ड खरीदना, या साइड बिजनेस शुरू करना भी हो सकता है। प्रत्येक विकल्प में वृद्धि की क्षमता होती है, विशेष रूप से अगर अच्छी तरह से मैनेज किया जाता है और हां, इसमें कुछ जोखिम शामिल हैं- वहां कोई आश्चर्य नहीं है, लेकिन ये इन्वेस्टमेंट वेल्थ-बिल्डिंग के अवसर प्रदान कर सकते हैं।

निवेश के प्रकार

1. **वित्तीय निवेश** : इसमें शेयर, बॉन्ड, म्यूचुअल फंड, और अन्य वित्तीय साधन शामिल हैं।
2. **वास्तविक निवेश** : इसमें अचल संपत्ति, सोना, और अन्य भौतिक संपत्तियां शामिल हैं।
3. **व्यवसायिक निवेश** : इसमें व्यवसाय शुरू करने या व्यवसाय में हिस्सेदारी खरीदने के लिए निवेश करना शामिल है।

निवेश के लाभ

1. **आय अर्जित करना** : निवेश से आय अर्जित करने का अवसर मिलता है।
2. **पैसे का बढ़ना** : निवेश से पैसे का मूल्य बढ़ सकता है।
3. **भविष्य के लिए बचत** : निवेश से भविष्य के लिए बचत करने में मदद मिलती है।
4. **विविधीकरण** : निवेश से पोर्टफोलियो का विविधीकरण होता है, जिससे जोखिम कम होता है।
5. **कैपिटल प्रिज़र्वेशन** : जब आप इन्वेस्ट करते हैं, तो आप अपने पैसे को सुरक्षित रखते हैं और समय के साथ वैल्यू को खोने से रोकते हैं।
6. **टैक्स लाभ** : कुछ इन्वेस्टमेंट आपकी टैक्स योग्य आय को कम करने में मदद कर सकते हैं, जो हमेशा बोनस होता है!

निवेश के जोखिम

1. **बाजार का जोखिम** : बाजार की स्थितियों में बदलाव से निवेश का मूल्य प्रभावित हो सकता है।
2. **क्रेडिट जोखिम** : उधारकर्ता के डिफ़ॉल्ट करने से निवेश का मूल्य प्रभावित हो सकता है।
3. **लिक्विडिटी जोखिम** : निवेश को आसानी से बेचने में समस्या हो सकती है।
4. **जोखिम** : मुद्रास्फीति से निवेश का मूल्य प्रभावित हो सकता है।

ऐसे करें निवेश

1. **लक्ष्यों को परिभाषित करें** : सोचें कि आप अपने इन्वेस्टमेंट को प्राप्त करने के लिए क्या चाहते हैं।
2. **अपने जोखिम का आकलन करें** : सोचें कि आप नींद को खोए बिना कितना जोखिम ले सकते हैं।
3. **अपने इन्वेस्टमेंट चुनें:** आपके लिए सही महसूस करने वाले स्टॉक, बॉन्ड, रियल एस्टेट और फंड का मिश्रण चुनें।
4. **नियमित रूप से इन्वेस्ट करें:** हर महीने एक निश्चित राशि अलग रखने पर विचार करें. यह पहले खुद को भुगतान करने की तरह है।

ऐसे करता है काम

आप किसी कंपनी (एक एसेट) में शेयर खरीदने का निर्णय लेते हैं, जिसका आपको विश्वास है कि आपके पास एक आशाजनक भविष्य है। अगर कंपनी की वैल्यू बढ़ती है, तो आपके शेयरों की कीमत भी बढ़ती है या शायद आप किसी ऐसे क्षेत्र में भूमि (संपत्ति) का प्लॉट खरीदते हैं जिसे आप सोचते हैं कि समय के साथ महंगा हो जाएगा। दोनों मामलों में, आपका पैसा काम करने के लिए लगाया जाता है, और अगर चीजें अच्छी तरह से चलती हैं, तो यह आपको लगातार ध्यान दिए बिना लौटना लाता है।

जवानी में कर लें इतना निवेश की बुढ़ापे में न गिननी पड़े परेशानियां

- रूल ऑफ 70 से जानिए बुढ़ापे में कितना पैसा होगा काफी
- आज की अर्थव्यवस्था में पैसा सबसे बड़ी जरूरत बन चुका
- जवानी में गलत फैसले लिए गए, तो बुढ़ापा मुश्किल होगा
- युवावस्था से ही रिटायरमेंट को मजबूत फंड बनाना शुरू करें
- अच्छा फंड भविष्य में आर्थिक तंगी से बचाएगा, जीवन आरामदायक बनेगा

जानकारी
बिजनेस डेस्क

अगर आप भी रिटायरमेंट प्लानिंग कर रहे हैं तो जरा ध्यान दें। आप जितना जल्दी निवेश शुरू करेंगे। उतना ही बुढ़ापे में सुरक्षित होंगे। इसलिए जरूरी है कि जवानी में इतना निवेश कर लें कि बुढ़ापे में परेशान न होना पड़े। इसके लिए आप रूल ऑफ 70 के फार्मूले को भी फॉलो कर सकते हैं। इससे पता चल जाएगा कि बुढ़ाप अच्छे से काटने के लिए आपको कितने धन की जरूरत होगी। आज की अर्थव्यवस्था में पैसा सबसे बड़ी जरूरत बन चुका है। अगर जवानी में गलत फैसले लिए गए, तो बुढ़ापा मुश्किल हो सकता है। इसलिए जरूरी है कि युवावस्था से ही रिटायरमेंट के लिए मजबूत फंड बनाना शुरू करें, ताकि भविष्य में आर्थिक तंगी से बचा जा सके और जीवन आरामदायक बना रहे।

हमेशा महंगाई का ध्यान रखें

आप भी सोचते होंगे कि अगर आपके पास एक करोड़ रुपये हों, तो जिंदगी की सारी ज़रूरतें पूरी हो जाएंगी, लेकिन क्या आपने कभी सोचा है कि यही रकम आने वाले वक्त में आपके लिए कितनी मायने रखेगी। आज जो रकम बड़ी लगती है, वो कल को शायद उतनी काम की न हो। महंगाई हर साल धीरे-धीरे बढ़ती रहती है और इसके साथ हमारी जरूरतों की कीमत भी। ऐसे में अगर आपने भविष्य की प्लानिंग सही से नहीं की, तो रिटायरमेंट के बाद दिक्कतें हो सकती हैं। कई बार हम यह मान लेते हैं कि जितना पैसा आज हमें काफी लग रहा है, वही आगे भी काफी रहेगा, लेकिन असलियत इससे बिल्कुल अलग है। इसलिए जरूरी है कि आप आज ही यह समझें कि आपकी रकम भविष्य में कितनी टिक पाएगी और उसी के हिसाब से अपनी बचत और निवेश की योजना बनाएं।

ऐसे जानें 'रूल ऑफ 70'

आपके पैसों की वैल्यू भविष्य में कितनी रह जाएगी, यह जानने के लिए 'रूल ऑफ 70' एक सरल तरीका है। इसमें आपको बस मौजूदा महंगाई दर जाननी होती है। जब आप 70 को उस महंगाई दर से भाग देंगे, तो जो संख्या निकलेगी, वह यह बताएगी कि कितने साल में आपके पैसों की आधी हो जाएगी। उदाहरण के लिए, अगर महंगाई दर 7% है, तो 70/7=10 साल। यानी 10 साल में आपके 1 करोड़ की वैल्यू 50 लाख जैसी हो जाएगी।

क्यों जरूरी है सही फाइनेंशियल प्लानिंग

लोग अक्सर सोचते हैं कि एक तय रकम जोड़ लेना ही काफी है, लेकिन वे महंगाई के असर को नजरअंदाज कर देते हैं। केवल सेविंग्स करना काफी नहीं है, आपको यह भी समझना होगा कि वो रकम भविष्य में क्या वैल्यू रखेगी। रूल ऑफ 70 जैसे सिंपल फॉर्मूलों से आप अपनी योजना को रियलिस्टिक बना सकते हैं। इससे आपको साफ नजर आएगा कि भविष्य में कितना पैसा वाकई जरूरी होगा।

स्मार्ट प्लानिंग

बुढ़ापे में आर्थिक तंगी से बचने के लिए युवावस्था से ही बचत और निवेश शुरू करें। हर महीने आय का कम से कम 20% रिटायरमेंट फंड में डालें। एसआईपी, पीपीएफ, और म्यूचुअल फंड जैसे विकल्प अपनाएं। महंगाई दर को ध्यान में रखते हुए फंड टारगेट तय करें। रूल ऑफ 70 से समझें पैसों की घटती वैल्यू और उसी अनुसार लॉन्ग टर्म प्लान तैयार करें।

सही लक्ष्य तय करें

बुढ़ापे में आर्थिक तंगी से बचने के लिए जरूरी है कि आप जल्द से जल्द निवेश शुरू करें। नियमित रूप से अपने फाइनेंशियल टारगेट्स की समीक्षा करें। बाजार की स्थितियों और महंगाई के हिसाब से अपनी रणनीति में बदलाव करते रहें। याद रखें, समय के साथ रुपये की वैल्यू घटती है, लेकिन सही प्लानिंग से आप अपनी भविष्य की जरूरतों को पूरा कर सकते हैं।

विकल्पों का विश्लेषण

निवेश की प्लानिंग एक प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति या संगठन अपने वित्तीय लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए निवेश रणनीति तैयार करते हैं। इसमें निवेश के उद्देश्यों, जोखिम सहनशक्ति, समय सीमा, और निवेश विकल्पों का विश्लेषण करना शामिल है। निवेश के उद्देश्यों को निर्धारित करना, जैसे कि आय अर्जित करना, पैसे का बढ़ना, या भविष्य के लिए बचत करना। निवेश की प्लानिंग एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है जो व्यक्ति या संगठन को अपने वित्तीय लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद कर सकती है।

ग्रीन एफडी : सुरक्षित निवेश के साथ पर्यावरण संरक्षण में भी करें योगदान

अभी सभी बैंक ग्रीन डिपॉजिट की सुविधा नहीं दे रहे हैं। फिर भी, कई बड़े सार्वजनिक और निजी क्षेत्र के बैंकों ने इस दिशा में कदम उठाया है। मोहित गांग के मुताबिक, एसबीआई, बैंक ऑफ इंडिया, एक्सिस बैंक, केनरा बैंक, सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, आईडीएफसी फर्स्ट बैंक, एयू स्मॉल फाइनेंस बैंक, इंडियन ओवरसीज बैंक और बैंक ऑफ बड़ौदा जैसे बैंक ग्रीन डिपॉजिट योजनाएं शुरू कर चुके हैं।

बचत
बिजनेस डेस्क

जलवायु परिवर्तन और प्रदूषण जैसी चुनौतियों से जूझ रही दुनिया अब निवेश के तरीकों में भी धीरे-धीरे बदलाव कर रही है। इन्हीं नए नए तरीकों के बीच भारत में अब एक नया फाइनेंशियल प्रोडक्ट तेजी से लोकप्रिय हो रहा है। इस लोकप्रिय प्रोडक्ट को नाम दिया है ग्रीन डिपॉजिट। यह एक ऐसा निवेश विकल्प है, जो न केवल सुरक्षित और अच्छा रिटर्न देता है, बल्कि पर्यावरण संरक्षण में भी अहम भूमिका निभाता है। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने जून 2023 में ग्रीन डिपॉजिट के लिए एक स्ट्रक्चर जारी किया था, जिसमें बैंकों को जमा पैसे को सिर्फ ग्रीन प्रोजेक्ट्स में लगाने की अनुमति दी गई है। इस प्रोजेक्ट्स में मुख्य रूप से सौर ऊर्जा, इलेक्ट्रिक गाड़ियां, पानी और वेस्ट मैनेजमेंट आदि शामिल होते हैं। ग्रीन डिपॉजिट एक सामान्य फिक्स्ड डिपॉजिट (एफडी) की तरह ही है, लेकिन इसका असर कहीं अधिक बड़ा और पॉजिटिव है। इसमें बैंकों को सालाना रिपोर्टिंग और थर्ड पार्टी ऑडिट जैसी पारदर्शिता की शर्तें पूरी करनी होती हैं, जिससे निवेशकों का भरोसा मजबूत होता है। स्टेट बैंक, एक्सिस, यूनियन बैंक जैसे कई बड़े बैंक इस विकल्प की पेशकश कर रहे हैं। अगर आप एक ऐसा निवेश चाहते हैं जो आपको आर्थिक लाभ के साथ-साथ धरती को भी लाभ पहुंचाए, तो ग्रीन डिपॉजिट एक समझदारी भरा कदम हो सकता है।

यह कैसे करता है काम

ग्रीन डिपॉजिट में भी निवेशक अपने पैसे को बैंक में एक निश्चित समय के लिए एफडी की तरह जमा करते हैं, और बदले में उन्हें उसका ब्याज मिलता है, लेकिन इस योजना की खासियत यह है कि जमा किए गए पैसे का इस्तेमाल केवल उन परियोजनाओं में किया जाता है, जो पर्यावरण के लिए फायदेमंद हों। इन परियोजनाओं में सौर और पवन ऊर्जा, इलेक्ट्रिक वाहन, जलवायु परिवर्तन से बचने के लिए हो रहे काम, पानी, वेस्ट मैनेजमेंट और ग्रीन बिल्डिंग आदि शामिल हो सकते हैं। बैंकिंग एक्सपर्ट कहते हैं, "जब कोई व्यक्ति या संस्था ग्रीन डिपॉजिट में निवेश करता है, तो बैंक उस पैसे को ऐसी परियोजनाओं के लिए लोन देने या निवेश करने में उपयोग करता है।

ऐसे समझें उदाहरण

उदाहरण के लिए, यह पैसा सौर ऊर्जा प्लांट बनाने, इलेक्ट्रिक गाड़ियां बनाने आदि को बनाने या फिर उसके लिए रिसर्च में इस्तेमाल किया जा सकता है। भारतीय रिजर्व बैंक ने यह सुनिश्चित करने के लिए सख्त नियम बनाए हैं कि इन फंड्स का उपयोग केवल इन्हीं चीजों के लिए ही हो। बैंकों को हर साल इन फंड्स के उपयोग और उनके होने वाले पर्यावरणीय प्रभाव की जानकारी सार्वजनिक करनी होती है।

क्या कहते हैं जानकार

ग्रीन डिपॉजिट में निवेश की प्रक्रिया एफडी की तरह ही होती है। निवेशक को एक निश्चित पैसा (जो आमतौर पर 5,000 रुपये से शुरू होकर 10 करोड़ रुपये तक हो सकती है) जमा करना होता है। जमा करने का समय और ब्याज दर बैंक के नियमों पर निर्भर करती है। इस पैसे को डीआईसीजीसी के तहत बीमा किया जाता है, जिससे निवेशक का पैसा सुरक्षित रहता है।

नियमों और पारदर्शिता

दूसरा अंतर नियमों और पारदर्शिता में है। ग्रीन डिपॉजिट पर भारतीय रिजर्व बैंक की पूरी नजर रहती है और इसके लिए अलग से दिशानिर्देश हैं। इसकी वजह से बैंकों को फंड्स के उपयोग की पूरी जानकारी देने और हर साल ऑडिट करवाना पड़ता है। इसके विपरीत, एफडी में ऐसी कोई शर्त या पारदर्शिता की जरूरत नहीं होती। ब्याज दरों की बात करें तो ग्रीन डिपॉजिट की दरें सामान्य एफडी के बराबर या कभी-कभी थोड़ी अधिक हो सकती हैं, क्योंकि बैंक पर्यावरण के प्रति जागरूक निवेशकों को आकर्षित करने के लिए कभी-कभी अच्छी दरें ऑफर करते हैं। एक और जरूरी अंतर नैतिक प्रभाव का है। ग्रीन डिपॉजिट में निवेश करके व्यक्ति पर्यावरण संरक्षण और जलवायु परिवर्तन से निपटने में योगदान देता है, जो इसे एक नैतिक और जिम्मेदार निवेश विकल्प बनाता है। सामान्य एफडी में ऐसा कोई पर्यावरणीय या सामाजिक प्रभाव नहीं होता।

ग्रीन डिपॉजिट के क्या फायदे

ग्रीन डिपॉजिट का सबसे बड़ा फायदा यह है कि यह निवेशकों को पर्यावरण संरक्षण में योगदान देने का मौका देता है। अगर आप जलवायु परिवर्तन या प्रदूषण जैसी समस्याओं को लेकर चिंतित हैं, तो यह योजना आपके पैसे को सही दिशा में लगाने का एक तरीका है। इसके अलावा, इसकी ब्याज दरें सामान्य एफडी की तुलना में प्रतिस्पर्धी होती हैं, जिससे निवेशक को आर्थिक लाभ भी मिलता है। यह योजना उन लोगों के लिए भी खास है, जो अपने निवेश को पर्यावरण, सामाजिक और शासन मानकों के आधार पर करना चाहते हैं। ग्रीन डिपॉजिट के जरिए निवेशक अपने पोर्टफोलियो में विविधता ला सकते हैं और साथ ही पर्यावरण के प्रति अपनी जिम्मेदारी भी निभा सकते हैं। बैंकों द्वारा हर साल दी जाने वाली रिपोर्ट और तीसरे पक्ष के ऑडिट से निवेशकों को यह भरोसा रहता है कि उनका पैसा सही जगह पर इस्तेमाल हो रहा है। साथ ही, डीआईसीजीसी के तहत बीमा होने से यह निवेश पूरी तरह सुरक्षित भी है।"

एफडी से कितना अलग है ग्रीन डिपॉजिट

ग्रीन डिपॉजिट और एफडी में कई समानताएं हैं। हालांकि, कुछ बुनियादी अंतर दोनों को अलग बनाते हैं। सबसे बड़ा अंतर यह है कि ग्रीन डिपॉजिट में जमा किए गए पैसे का इस्तेमाल सिर्फ पर्यावरण को लाभ पहुंचाने वाले परियोजनाओं में किया जाता है, जबकि एफडी में जमा पैसे का इस्तेमाल बैंक अपने सामान्य कारोबार, लोन देने या दूसरे निवेश में उपयोग कर सकता है। इस तरह ग्रीन डिपॉजिट में निवेश करने वाला हर व्यक्ति यह दावा कर सकता है कि उसका पैसा पर्यावरण से जुड़ी परियोजनाओं के लिए हो रहा है।

माना जा रहा है कि जब प्रतिस्पर्धा सीमित होती हैतो मूल्य निर्धारण पारदर्शी नहीं रह जाता। इससे परियोजना की लागत अनावश्यक रूप से बढ़ने की आशंका रहती है। ईपीएफओ के टेंडर में अगर अधिक से अधिक कंपनी हिस्सा लेगी तो इसका लाभ उन्हें ही होगा और प्रतिस्पर्धा की वजह से ईपीएफओ को कम लागत में एक बेहतर सेवा प्रदाता कंपनी की सेवा मिलेगी।

ईपीएफओ के डिजिटल प्लेटफॉर्म में हो रहा बदलाव, आखिर क्या होगा असर

बिजनेस डेस्क

देश के 27 करोड़ से अधिक कामगारों की बचत की संरक्षक संस्था के रूप में कार्य कर रही कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (ईपीएफओ) ने 14 जुलाई 2025 को अपने आईटी सिस्टम (ईपीएफओ प्लेटफार्म) पर व्यापक बदलाव की तैयारी शुरू कर दी है। स्वभाविक है कि इस बदलाव से लोगों पर व्यापक असर भी दिखाई देगा। कुछ राहत मिलेगी तो कुछ खतरे भी बढ़ सकत हैं। ईपीएफओ के इस बदलाव से जुड़ी हालिया प्रक्रिया विशेषकर एजेंसी के चयन हेतु जारी एक्सप्रेशन ऑफ इंटरेस्ट(ईओआई) को लेकर विशेषज्ञों और उद्योग जगत ने पारदर्शिता, निष्पक्षता और संभावित पक्षपात को लेकर गहरी चिंता जताई है। एक्सप्रेशन ऑफ इंटरेस्ट दस्तावेज़ में एक प्रमुख शर्त यह है कि बोलीदाता ने प्रस्तावित कोर बैंकिंग सोल्यूशन (सीबीएस) को किसी अनुसूचित कॉर्मसियल बैंक में लागू किया हो। पहली नजर में यह एक सामान्य, अनुभव आधारित मानदंड लगता है, लेकिन विशेषज्ञों के अनुसार यह शर्त ईपीएफओ की वास्तविक आवश्यकताओं के अनुरूप नहीं है।

खातों का रख-रखाव, अंशदान प्रबंधन, पेंशन का वितरण आदि है। इसके लिए एक मजबूत, स्केलेबल और यूज़र-फ्रेंडली डिजिटल प्लेटफॉर्म जरूरी है, लेकिन इसके लिए कोर बैंकिंग सॉल्यूशन (सीबीएस) की अनिवार्यता अप्रासंगिक मानी जा रही है। इसका कारण ये है कि ईपीएफओ का काम कोर बैंकिंग से संबंधित नहीं है। ईओआई की भाषा से यह प्रतीत होता है कि बैंकिंग क्षेत्र को सेवा देने वाली कंपनी को प्राथमिकता दी जा रही है। प्री-बिड मीटिंग में शामिल कंपनियों ने यह भी ये सवाल उठाये किया कि दस्तावेज़ में वर्णित तकनीकी विशिष्टताएँ एक कंपनी विशेष की क्षमताओं से काफी मेल खाती हैं। कम्पनियों ने ईपीएफओ पोर्टल पर क्वेरी जेनेरेट कर अपनी चिंता व्यक्त की लेकिन ईपीएफओ ने कंपनियों के सभी आपत्ति को दरकिनार कर दिया।

नवाचार की राह में बाधा

ईओआई की शर्तों से कई प्रतिष्ठित कंपनियां इस काम के लिए बिड की करने की प्रक्रिया से बाहर हो सकती हैं, खासकर जिन्होंने डिजिटल गवर्नेंस और सार्वजनिक सेवाओं के लिए बेहतरीन समाधान विकसित किए हैं लेकिन बैंकिंग सीबीएस पर काम नहीं किया है। ईओआई बैठक में भाग लेने वाली प्रमुख कंपनियां टीसीएस, इंफोसिस, विप्रो, सीआईपीएल, एडब्ल्यूएस, एचसीएल सॉफ्टवेयर और फिन्सिल थीं। जबकि केवल एक-दो कंपनियां ही सीबीएस का अनुभव रखती हैं।

इस पर क्या है विशेषज्ञों की राय

ईपीएफओ कोई बैंक नहीं

ईपीएफओ कोई बैंक नहीं है। इसकी कार्यप्रणाली सार्वजनिक सेवा मंच जैसी है। ऐसे में बैंकिंग सीबीएस की अनिवार्यता तकनीकी दृष्टि से गैरजरूरी और रणनीतिक रूप से भ्रामक है। -**पवन दुग्गल, डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर एवं सायबर सुरक्षा विशेषज्ञ**

उद्देश्य समाधान ढूंढना नहीं

यह आरएफपी किसी खास उत्पाद के लिए रिवर्स इंजीनिरिड लगती है। ये बहुत ही रिस्ट्रीक्टिव है एवं इसका उद्देश्य समाधान ढूंढना नहीं, बल्कि समाधान में किसी ख़ास बोलीदाता (बिडर) को लाभ पहुंचाना है। -**अनूज प्रकाश अवस्थी, टेक्नोलॉजी एडवोकेट, सुप्रीम कोर्ट।**

नवाचार-विरोधी भी

- डिजिटल एवं आईटी के काम के लिए टेंडर की प्रक्रिया में हिस्सा लेने वाली एक प्रमुख कंपनी एमनेक्स टेक्नॉलाजी का कहना है कि यह सिर्फ खराब खरीद प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह नवाचार-विरोधी भी है। यह सरकार के 'मेक इन इंडिया' और 'ओपन इनोवेशन' के मूल सिद्धांतों के भी खिलाफ है।
- वहीं वित्त मंत्रालय में वरिष्ठ सलाहकार के पद पर काम कर चुके एक अधिकारी ने बताया कि टेंडर प्रक्रिया में किसी विशेष शर्त को जोड़ना या किसी खास कंपनी को फायदा पहुंचाने के लिए शर्तों का निर्धारण जीएफआर एवं सीवीसी के नियमों का उल्लघन है। उनके मुताबिक, अगर प्रतियोगिता का दायरा सीमित होगा, तो बोली की कीमतें बाजार के अनुरूप नहीं होंगी।

ईपीएफओ के लिए आगे की राह

- ईओआई जमा करने की अंतिम तिथि जैसे-जैसे नजदीक आ रही है, ईपीएफओ पर यह दबाव बढ़ रहा है कि वह इस प्रक्रिया की समीक्षा करे, और योग्यताओं को कार्य-आधारित और समाधान-उन्मुख तरीके से परिभाषित करे। साथ ही इस प्रक्रिया मेंतकनीकी रिप्रजेंटेशन को प्रमुखता दी जाए। मूल्यांकन की प्रक्रिया में विविध पारदर्शी मानदंड जोड़े जाएं साथ ही पूरी प्रक्रिया में निष्पक्ष दृष्टिकोण अपनाया जाए।

खबर संक्षेप

जनकल्याण में जुटी नायब सरकार: जैन

बहादुरगढ़। भाजपा के वरिष्ठ नेता डॉ. पंकज जैन ने नायब सरकार की सराहना करते हुए कहा कि हरियाणा में जन कल्याणकारी नीतियों के माध्यम से भाजपा सरकार सर्व समाज की भलाई कर रही है। जैन ने बताया कि सीएम नायब सैनी ने विवाह शगुन योजना के तहत शगुन राशि 41 हजार रुपये से बढ़ाकर 51 हजार रुपये कर दी है। यह वृद्धि पिछड़ा वर्ग कल्याण की दिशा में सशक्त कदम है। नायब सरकार का यह निर्णय बेटियों के सम्मान और सामाजिक न्याय की दिशा में प्रतिबद्धता को दर्शाता है। भाजपा सरकार में बिना भेदभाव के काम कर रही है। प्रदेश सरकार की योजनाओं का लाभ सीधे व्यक्ति को मिल रहा है। हर वर्ग नायब सरकार की नीतियों से खुश है।

डॉ. पंकज जैन

जलभराव से बर्बाद फसल का मुआवजा दे सरकार

बहादुरगढ़। ऑल इंडिया किसान खेत मजदूर संगठन के प्रदेश सचिव जयकरण मांडोठी तथा अध्यक्ष अनूप सिंह मातनहेल ने कहा कि हर वर्ष प्रदेश में हजारों एकड़ फसल जलभराव से बर्बाद हो जाती है। कठोर शर्तों के कारण बीमा कंपनियां बर्बाद हुई फसलों का मुआवजा किसानों को नहीं देती। हरियाणा सरकार भी कोई क्षतिपूर्ति नहीं करती। किसान हाथ मलते रह जाते हैं। फसल बर्बाद होने के बाद उनके पास आमदनी का कोई जरिया नहीं बचता और वे कर्जजाल में फंस जाते हैं। उन्होंने किसानों की बर्बादी पर गहरी चिंता प्रकट करते हुए हरियाणा सरकार से तुरंत स्पेशल गिरदावरी कराकर पीड़ित किसानों को कम से कम 50 हजार रुपए प्रति एकड़ मुआवजा देने की मांग की। साथ ही कहा कि प्रदेश के किसान डीएपी तथा यूरिया की कमी से जूझ रहे हैं। सरकार किसानों को तुरंत खाद उपलब्ध कराए।

मारपीट मामले में तीन आरोपी गिरफ्तार

धारूहेड़ा। पांचाल कॉलोनी में मारपीट करने और धमकी देने के मामले में पुलिस ने तीन आरोपियों को काबू किया है। पुलिस ने पीड़ित के बयान पर 15 जुलाई को विभिन्न धाराओं के तहत केस दर्ज करने के बाद जांच शुरू की थी। पुलिस ने दो आरोपियों को काबू कर लिया था। अब इस मामले में पांचाल कॉलोनी निवासी चिराग, नितेश और मनीष को काबू किया गया है।

एचआर ग्रीन फील्ड वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में प्रतियोगिता का आयोजन

तैराकी प्रतियोगिता में अरावली सदन के खिलाड़ी रहे प्रथम

झज्जर। तैराकी प्रतियोगिता के विजेता खिलाड़ियों के साथ स्कूल प्रबंधन समिति सदस्य। फोटो :हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

- प्रतियोगिता में पांचवीं से ग्यारहवीं कक्षा तक के विद्यार्थियों ने उत्साह के साथ भाग लिया

एचआर ग्रीन फील्ड वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में शनिवार को अंतर सदनीय तैराकी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में पांचवीं से ग्यारहवीं कक्षा तक के विद्यार्थियों ने उत्साह के साथ भाग लिया। विद्यालय प्राचार्य मोहिंद्र सिंह ने बताया कि 4 गुणा 100 मीटर रिले रेस में अरावली सदन से हिमांशु, चिराग, पारस व हेमंत ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। इनके अलावा नीलगिरी सदन से नैतिक, वंश, दीपांशु व आर्यन को द्वितीय तथा विंध्याचल सदन से कार्तिक, ईशांत, दक्षदेव व हिमांशु को तृतीय स्थान मिला। स्कूल प्रबंधन समिति व प्राचार्य द्वारा विजेता विद्यार्थियों को मेडल देकर सम्मानित किया गया।

झज्जर। कार्यक्रम में समूह गान की प्रस्तुति देते हुए विद्यार्थी। फोटो :हरिभूमि

विभिन्न प्रतियोगिताओं में विद्यार्थियों ने दिखाई प्रतिभा

झज्जर। संस्कारम इंटरनेशनल स्कूल पाटोदा में शनिवार को ग्रैंड पैरेंट्स-डे के उपलक्ष्य में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में नर्सरी से आठवीं कक्षा तक के विद्यार्थियों ने भागीदारी की। विद्यार्थियों के बीच नृत्य, समूहगान, कविता वाचन, नेल्स आर्ट, मेकअप आर्ट, बलून ब्रस्टिंग, कार्ड मेकिंग, टर्बन टाइंग, बैंगल्स वियरिंग और काइट फ्लाइंग आदि गतिविधियां कराई गईं। विद्यार्थियों ने कार्यक्रम में शामिल हुए अपने दादा-दादी व नाना-नानी का अभिनंदन कर उनसे आशीर्वाद भी लिया। विद्यालय की प्राचार्या श्वेता कौशिक ने अपने संबोधन में कहा कि दादा-दादी के साथ व उनके आसपास रहना अपने आप में एक मजेदार एहसास है। वे अपने प्यार और देखभाल से हमारे जीवन को खुशियों से भर देते हैं। बच्चों के मानसिक और शारीरिक विकास के लिए संयुक्त परिवार व्यवस्था सबसे अच्छी है। कार्यक्रम में मुख्यातिथि के रूप में उपस्थित रामअवतार यादव ने कहा कि बड़े-बुजुर्ग पारिवारिक इतिहास का प्रेरणा स्रोत होते हैं। हमें हमेशा उनका सम्मान करना चाहिए। प्रतियोगिता के सभी विजेता विद्यार्थियों को मुख्यातिथि द्वारा पुरस्कृत किया गया।

अभय सिंह को धमकी मिलने से इनेलो भड़की

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

शीला राठी

- लगातार प्रदेश में अपराधिक वारदातें बढ़ रही

इनेलो के राष्ट्रीय अध्यक्ष अभय सिंह चौटाला को जान से मारने की धमकी मिलने पर इनेलो भड़क गई है। इनेलो प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य शीला नफे सिंह राठी का कहना है कि हरियाणा में जंगलराज है और कानून व्यवस्था ध्वस्त हो चुकी है। पूर्व विधायक नफे सिंह राठी की निर्मम हत्या करने वाले डेढ़ साल बाद भी कानून की गिरफ्त से बाहर हैं। इनेलो प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य शीला नफे सिंह राठी ने बताया कि प्रदेश में हत्या, डकैती व फिरौती मांगने की वारदातें आम बात हो गई है। इससे प्रदेश में भय का माहौल व्याप्त है। भाजपा राज में अपराधियों के हौसले इतने बुलंद हैं कि वह आमजन के साथ ही बड़े नेताओं को भी जान से मारने की धमकी दी जा रही हैं। डेढ़ साल पहले इनेलो के तत्कालीन प्रदेश अध्यक्ष नफे सिंह राठी को धमकी देने के बाद रेआम हत्या कर दी गई थी। उस जघन्य वारदात के साजिशकर्ता व हत्यारे आज भी पुलिस गिरफ्त से बाहर हैं। लगातार प्रदेश में अपराधिक वारदातें बढ़ रही हैं। बदमाश जान से मारने की धमकी खुले तौर पर देते हुए रंगदारी मांग रहे हैं। शीला राठी के अनुसार अपराधियों में कानून का डर समाप्त हो गया है। बिना राजनीतिक संरक्षण के अपराध इस कदर नहीं बढ़ सकता। इनेलो के राष्ट्रीय अध्यक्ष अभय चौटाला को बदमाशों द्वारा धमकी देने के बावजूद सरकार व पुलिस प्रशासन की ओर से ठोस कदम नहीं उठाए जा रहे है। शीला नफे सिंह राठी ने अभय चौटाला व उनके परिवार की सुरक्षा सुनिश्चित करने की मांग की। साथ ही कहा कि स्व. नफे सिंह राठी का परिवार आज भी न्याय के इंतजार में है। सीबीआई को केस सौंपने के बावजूद साजिशकर्ता व हत्यारे खुलेआम घूम रहे हैं।

महिला पर हमले का आरोपी भेजा जेल

रेवाड़ी। विजय नगर में महिला पर जानलेवा हमले के आरोपी लिव इन पार्टनर को पुलिस ने कोर्ट में पेश करने के बाद जेल भेज दिया। रामसिंहपुरा निवासी मनीष महिला के साथ विजय कॉलोनी में रहा था। उसने गत वीरवार की रात महिला पर चाकू से हमला कर दिया, जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गई। पुलिस ने महिला को अस्पताल में दाखिल कराने के साथ ही आरोपी को गिरफ्तार कर लिया था। उसे कोर्ट में पेश किया गया, जहां से जेल भेजने के आदेश हुए।

निलोठी स्कूल में नाटक के माध्यम से किया जागरूक

बहादुरगढ़। निलोठी स्कूल में नाटक से जागरुक करती टीम। फोटो :हरिभूमि

- नाटक के माध्यम से गांव के लोगों को संवाद और समझदारी के ज़रिए सामाजिक बदलाव लाने का संदेश दिया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

गांव निलोठी के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में ब्रेकथ्रू संस्था द्वारा 'बड़ी सी आशा – बदलाव की ओर बढ़ते कदम' नाटक का मंचन किया गया। नाटक के माध्यम से गांव के लोगों को संवाद और समझदारी के जरिए सामाजिक बदलाव लाने का संदेश दिया गया।

ब्रेकथ्रू संस्था से राहुल ने बताया कि यह अभियान लोगों को अपने माता-पिता से खुलकर बात करने और हर समस्या का समाधान बातचीत के जरिए खोजने के लिए प्रेरित करता है। यही संवाद समाज में एक सकारात्मक बदलाव ला सकता है। प्रवक्ता सुमन आर्य ने कहा कि ऐसे कार्यक्रमों से बच्चे और अभिभावक इन मुद्दों को समझते हुए अपने सपनों को साकार करने की दिशा में आगे बढ़ेंगे। आंगनवाड़ी कार्यकर्ता बिमला ने आजकल माता-पिता और बच्चों के बीच बातचीत कम होने पर चिंता जताई। उनके अनुसार हर माता-पिता को समय निकालकर अपने बच्चों से खुलकर बात करनी चाहिए। वीरेंद्र के निर्देशन में पूरी टीम ने नाटक से प्रभावित किया।

युवाओं को प्राचीन परंपरा निभाने के संदेश के साथ पिछले ढाई दशकों से कांवड़ ला रहे दंपत्ति

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

झज्जर। कांवड़ शिविर में ठहरे डहीना निवासी पूर्व हवलदार राजेंद्र सिंह व चांदी देवी। फोटो :हरिभूमि

युवाओं को अपनी प्राचीन परंपरा कभी नहीं भूलनी चाहिए। ये परंपराएं हमारी संस्कृति को जीवित रखती हैं। यह कहना है कि रेवाड़ी जिले के डहीना गांव निवासी दंपत्ति पूर्व हवलदार राजेंद्र सिंह व चांदी देवी का जो पिछले करीब पच्चीस वर्षों से शिव कांवड़ ला रहे हैं। गुर्जर धर्मशाला में चल रहे कांवड़ सेवा शिविर में रात्रि विश्राम के लिए ठहरे रिटायर्ड हवलदार राजेंद्र सिंह ने बताया कि वे वर्ष 1996 में आर्मी में हवलदार पद से सेवानिवृत्त हुए थे। सेवानिवृत्ति के बाद जब अधिकांश समय घर पर रहने लगे तो उन्होंने धार्मिक कार्यक्रमों में जाना शुरू कर दिया। इसके बाद वे जहां गांव में होने वाले धार्मिक कार्यक्रमों में बढ़ चढ़कर भाग लेने लगे वहीं बीच-बीच में बालाजी के दर्शनों के लिए भी उनके मंदिर जाते। इसके बाद जब उन्हें ज्ञान हुआ कि परमात्मा एक है और बजरंगबली भी भगवान का शिव का दूसरा रूप हैं तो उसकी आस्था सभी देवी-देवताओं में बढ़ गई। ऐसे में उन्होंने वर्ष 2000 में पहली बार हरिद्वार से शिव कांवड़ लाने की इच्छा अपनी पत्नी चांदी देवी को बताई तो वे भी उसके साथ चलने को तैयार हो गई। इसके बाद वे करीब 23 बार कांवड़ लाकर भगवान शिव का जलाभिषेक कर चुके हैं। कांवड़ के इस सफर में उनकी पत्नी ने सदैव उसका साथ दिया है। वे जहां पेटी में बांध कर कांवड़ लाते हैं वहीं उनकी पत्नी हर बार झूला कांवड़ लाकर बाघौत के प्राचीन शिव मंदिर में चढ़ाती है। उन्होंने युवाओं को संदेश दिया कि वे नशा आदि को छोड़ कर अपना ध्यान पढ़ाई व धार्मिक कार्यक्रमों में लगाएं। अपनी प्राचीन परपंरा को कभी नहीं भूले तथा अपने नैतिक कर्त्तव्यों का पालन करें। उनका एक बेटा व तीन बेटियां हैं। सभी शादी करने उपरांत उन्होंने तीर्थ करने का

झज्जर। एलडीएम कार्यालय सभागार में आयोजित बैठक में भाग लेते हुए बैंक प्रतिनिधि। फोटो :हरिभूमि

शाखाओं में राजभाषा हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करें बैंक : जेके मंडल

झज्जर। स्थानीय पंजाब नेशनल बैंक स्थित अग्रणी जिला प्रबंधक कार्यालय में शनिवार को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की प्रथम छमाही बैठक का आयोजन हुआ। बैठक की अध्यक्षता एलडीएम विजय सिंह ने जबकि बतौर मुख्यातिथि राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय, भारत सरकार के सहायक निदेशक जेके मंडल उपस्थित ने शिरकत की। उन्होंने अपने संबोधन में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार की दिशा में केंद्रीय कार्यालयों की भूमिका को सराहा और सभी कार्यालयों से अपेक्षा की कि वे संवैधानिक प्रावधानों के अनुरूप हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग सुनिश्चित करें। बैठक में 14 कार्यालय प्रमुखों और 16 हिंदी अधिकारियों एवं नामित अधिकारियों सहित कुल 30 सदस्यों ने भाग लिया।

ग्रामीणों को किया अधिकारों के प्रति जागरूक

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

झज्जर। शिविर में पहुंचे लोगों को कानूनी परामर्श देते हुए विधि संकाय के शिक्षक।

संस्कारम विश्वविद्यालय के अंतर्गत संचालित स्कूल ऑफ लॉ एंड लीगल स्टडीज द्वारा शनिवार को क्षेत्र के गांव छुछकवास में कानूनी सहायता एवं जागरुकता शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्र के लोगों को उनके कानूनी अधिकारों के प्रति जागरुक करना और उन्हें निःशुल्क कानूनी सलाह प्रदान करना रहा। शिविर में विधि संकाय के वरिष्ठ प्राध्यापकों और विधि के विद्यार्थियों ने सहभागिता करते हुए ग्रामीणों की समस्याओं को सुना और समाधान के लिए आवश्यक परामर्श दिया। शिविर में भूमि विवाद, महिला सशक्तिकरण, घरेलू हिंसा, उत्तराधिकार, वरिष्ठ नागरिकों के अधिकार और अन्य सामाजिक-न्याय से जुड़े विषयों पर चर्चा की गई। संस्कारम विश्वविद्यालय के कुलाधिपति डॉ. महिपाल ने कहा कि कानून का ज्ञान प्रत्येक नागरिक के लिए उतना ही आवश्यक है जितना जीवन में शिक्षा का महत्व। संस्कारम विश्वविद्यालय समाज के अंतिम व्यक्ति तक न्याय और जागरुकता पहुंचाने के लिए निरंतर प्रयासरत है। कार्यक्रम की संयोजक अवनिका ने बताया कि इस प्रकार के कानूनी सहायता शिविर ग्रामीण क्षेत्रों में न्याय तक पहुंच को सरल बनाने का प्रयास हैं। ग्रामीणों ने इस पहल की सराहना करते हुए कहा कि ऐसे आयोजन उन्हें न्याय प्रणाली को समझने और कानूनी समस्याओं के समाधान खोजने में सहायता प्रदान करते हैं। इस मौके पर महेंद्र सरपंच व सोमबीर यादव सहित अन्य भी उपस्थित रहे।

कांवड़ यात्रा के चलते जिले में वाहनों पर नहीं बजेगा डीजे

झज्जर। जिलाधीश स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने कांवड़ यात्रा के दौरान ध्वनि प्रदूषण और कानून-व्यवस्था बनाए रखने के उद्देश्य से जिले में वाहनों पर डीजे व साउंड सिस्टम रखने और हथियारों के प्रदर्शन पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने के आदेश जारी किए हैं। जिलाधीश द्वारा आगामी 24 जुलाई की सुबह तक कांवड़ यात्रा के दौरान वाहनों पर डीजे लगाना, तेज आवाज में गाने बजाना तथा अपने साथ हथियार या अन्य अस्त्र-शस्त्र रखना पूरी तरह प्रतिबंधित कर दिया है। यदि कोई व्यक्ति इस आदेश की अवहेलना करता पाया गया तो उसके विरुद्ध भारतीय न्याय संहिता, 2023 की धारा 223 के अंतर्गत दंडात्मक कार्रवाई की जाएगी।

एक किलो 18 ग्राम चरस सहित दो आरोपी गिरफ्तार

झज्जर। सीआईए की एक टीम द्वारा नशीले पदार्थ के सप्लायर और खरीददार दोनों को गिरफ्तार किया गया है। सीआईए प्रभारी विवेक मलिक ने बताया कि पुलिस टीम को गुप्त सूचना मिली थी कि हिमाचल प्रदेश निवासी केवल राम नशीला पदार्थ बेचने का धंधा करता है जो अब नशीला पदार्थ चरस लिए हुए झज्जर फरुखनगर रोड गेट नंबर तीन सेक्टर आठ के नजदीक उसे बेचने की फिराक में खड़ा हुआ है। जिस पर कार्रवाई करते हुए पुलिस टीम मौके पर पहुंची और शक की बिनाह पर एक व्यक्ति को पकड़ा गया। पकड़े गए व्यक्ति की नियमानुसार तलाशी लेने पर उसके थैले से नशीला पदार्थ चरस बरामद हुआ। जिसका वजन करने पर 1 किलो 18 ग्राम पाया गया। पूछताछ के बाद पुलिस टीम ने आगामी कार्रवाई करते हुए मामले में रामदास निवासी तिरपडी जिला गुरुग्राम को गिरफ्तार किया जांच में सामने आया कि आरोपी रामदास ने केवल राम से यह नशीला पदार्थ मंगवाया था। पकड़े गए दोनों आरोपियों के खिलाफ नियमानुसार कार्यवाई करते हुए स्थानीय अदालत में पेश किया गया। जहां से दोनों को न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया।

कैडेट निशा की उपलब्धि से महाविद्यालय ही नहीं, पूरी बटालियन गौरवान्वित हुई

एनसीसी कैडेट छात्रा निशा को किया सम्मानित

- एप्लिकेशन फायरिंग में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए पूरे निदेशालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

राजकीय स्नातकोत्तर नेहरू महाविद्यालय की बीए तृतीय वर्ष की छात्रा और एनसीसी कैडेट सार्जेंट निशा ने एप्लिकेशन फायरिंग में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए पूरे निदेशालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया। उसे पंजाब के रूपनगर स्थित एनसीसी अकादमी में आयोजित कैंप के समापन समारोह में सर्वश्रेष्ठ फायरिंग के लिए एनसीसी के अतिरिक्त महानिदेशक मेजर जनरल जगदीप सिंह चीमा द्वारा सम्मानित किया गया। 8 हरियाणा बटालियन एनसीसी, रेवाड़ी से संबद्ध कैडेट निशा ने एनसीसी के पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश एवं चंडीगढ़ निदेशालय की थल सैनिक टीम में अपना स्थान पुख़्ता कर महाविद्यालय का नाम रोशन किया है। एनसीसी अधिकारी डॉक्टर कविता ने बताया कि यह प्रतियोगिता चंडीगढ़ निदेशालय के अंतर्गत आने वाले आठ ग्रुप हेडक्वार्टर्स के बीच आयोजित की गई। कैंप में थल सैनिक टीम चयन के लिए छह प्रमुख श्रेणियों जैसे फायरिंग, मानचित्र अध्ययन, बाधा प्रशिक्षण, तंबू गाड़ना, क्षेत्र शिल्प एवं युद्ध शिल्प तथा स्वास्थ्य और सफाई में स्पर्धा हुई। प्राचार्य प्रोफेसर दलबीर सिंह ने कहा कि कैडेट निशा की इस उपलब्धि से महाविद्यालय ही नहीं अपितु पूरी बटालियन गौरवान्वित हुई है।

बता दें कि थल सैनिक कैंप एनसीसी कैडेट्स को सैन्य प्रशिक्षण, नेतृत्व विकास, अनुशासन और राष्ट्रीय एकता की भावना से ओत-प्रोत करता है। इसमें फायरिंग, नक्शा पढ़ना, बाधा पार करना जैसी व्यावहारिक सैन्य क्षमताएं विकसित की जाती हैं, जो कैडेट्स को न केवल शारीरिक रूप से सशक्त बनाती हैं बल्कि उन्हें रक्षा क्षेत्र में करियर के लिए भी तैयार करती हैं।

झज्जर। निशा को सम्मानित करते हुए मेजर जनरल जगदीप सिंह चीमा। फोटो :हरिभूमि

बाइक व स्कूटी चोरी

बहादुरगढ़। शहर के ब्रिगेडियर होशियार सिंह मेट्रो स्टेशन के निकट से एक स्कूटी तथा छोटूराम पार्क की गली नंबर-7 से एक मोटरसाइकिल चोरी हो गई है। जसौर खेड़ी निवासी पंकिल ने वीरवार को ब्रिगेडियर होशियार सिंह मेट्रो स्टेशन के नजदीक इलेक्ट्रिक स्कूटी खड़ी की थी। जब वह वापस लौटा तो स्कूटी गायब थी।

वहीं दूसरी तरफ छोटूराम पार्क निवासी सतवीर ड्राइवरी करता है। उसने भी वीरवार को अपनी मोटरसाइकिल अपने मकान के बाहर खड़ी की थी। लेकिन कुछ देर बाद मोटरसाइकिल गायब मिली। पुलिस ने दोनों मामलों में केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

सूचना

मैं, विरेंद्र सिंह (Virender Singh) पुत्र वेद प्रकाश साहू (Ved Prakash Sahu) निवासी मकान नंबर-161, प्रथम तल, एचएल सिटी, सेक्टर-37, बहादुरगढ़, जिला झज्जर, हरियाणा बयान करता हूं कि मेरा पुराना नाम विरेंद्र सिंह (Virender Singh) है और मैंने अपना नाम बदलकर विरेंद्र सिंह साहू (Virender Singh Sahu) कर लिया है। ये दोनों एक ही व्यक्ति अर्थात मेरे ही नाम हैं। मुझे भविष्य में मेरे नए नाम विरेंद्र सिंह साहू (Virender Singh Sahu) से ही जाना व पहचाना जाए।

सूचना

मैं, नारायणी पत्नी श्री जयसिंह निवासी गांव खेडका गुर्जर (57) दुल्हेडा, बहादुरगढ़, जिला झज्जर, हरियाणा-124507 बयान करती हूं कि मेरा पुत्र दीपक व पुत्रवधु रेनू मेरे कहने-सुनने से बाहर हैं। इसलिये मैं इनको अपनी चल-अचल सम्पत्ति से बेदखल करती हूं। इनसे लेन-देन, व्यवहार करने वाला स्वयं जिम्मेवार होगा। मेरी व मेरे परिवार की कोई जिम्मेवारी नहीं होगी।

खबर संक्षेप

बहादुरगढ़। रेलवे स्टेशन पर बाल तस्करी को लेकर जागरुक करते पदाधिकारी। फोटो : हरिभूमि

रेलवे स्टेशन पर चलाया जागरुकता अभियान

बहादुरगढ़। रेलवे बोर्ड, रेलवे सुरक्षा बल तथा एमडीडीऑफ इंडिया द्वारा विश्व मानव तस्करी विरोधी दिवस को लेकर जागरुकता व साक्षरता अभियान चलाया गया। शनिवार को बहादुरगढ़ रेलवे स्टेशन पर हुए कार्यक्रम में लोगों को मानव तस्करी के संबंध में जागरूक किया गया। स्टेशन अधीक्षक यशपाल मीणा ने कहा कि हम जागरुकता से ही बाल तस्करी को रोक सकते हैं। बाल तस्करी की सूचना तुरंत चाइल्ड हेल्पलाइन, रेलवे हेल्पलाइन या जिला प्रशासन को देने की समझाइश दी गई। इस अवसर पर एमडीडीऑफ इंडिया के जिला समन्वयक मनोज कुमार, जीआरपी के एसआई कुलदीप, कविता, उर्मिला, संदीप आदि मौजूद रहे।

बहादुरगढ़। शहीद मंगल पांडे को नमन करते गुभाना निवासी।

गुभाणा में शहीद मंगल पांडे को किया नमन

बहादुरगढ़। गुभाणा के लोकहित पुस्तकालय में शहीद मंगल पांडे की जयंती पर ग्रामीणों ने उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। समिति अध्यक्ष नरेश कौशिक ने मंगल पांडे के जीवन पर प्रकाश डाला। उन्होंने 1857 में हुए प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। सरकार द्वारा उनके सम्मान में 1984 में डाक टिकट भी जारी किया गया था। कार्यक्रम में सूबेदार मेजर सुरेश कुमार, जयभगवान, रामकुमार, सतबीर कौशिक, योगेश, दीपक, विशेष, साहिल व फूल कुमार ने भी मंगल पांडे के चित्र पर पुष्प अर्पित करते हुए नमन किया।

शहर के सेक्टर-14 में सफाई के दौरान निकासी नाले में मिला शव

पुलिस के अनुसार पांच से छह महीने पुराना शव, पहचान के प्रयास शुरू

बहादुरगढ़। नाले से शव बाहर निकालती पुलिस टीम। फोटो : हरिभूमि

शरीर पर सर्दियों के कपड़े मिले हैं, जिससे आशंका है कि मृतक की मौत सर्दियों में नाले में गिरने से हुई होगी।

■ सूचना पाकर सेक्टर-6 थाना पुलिस मौके पर पहुंची और जांच शुरू की। सीन ऑफ क्राइम टीम भी बुलाई

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

शहर के सेक्टर-14 स्थित एक नाले में सफाई के दौरान सड़ी गली अवस्था में व्यक्ति का शव मिला है। शव पांच से छह महीने पुराना है। सेक्टर-6 थाना पुलिस ने शव को नागरिक अस्पताल में रखवा कर पहचान के प्रयास शुरू कर दिए हैं। घटना शुक्रवार की शाम की है।

सेक्टर-14 में मदर प्राइड स्कूल के बाहर तिकोना पार्क के साथ लगते नाले में यह शव पाया गया है। शरीर पर सर्दियों के कपड़े मिले हैं, जिससे आशंका है कि मृतक की मौत सर्दियों में नाले में गिरने से हुई होगी। लंबे समय तक झाड़ियों और गंदगी के ढेर में दबे रहने के कारण शव पर किसी की नजर नहीं पड़ी। शुक्रवार को जब जब पार्क और नाले की घास व कचरा हटाया जा रहा था, तब शव पर किसी की नजर पड़ी। सूचना पाकर सेक्टर-6 थाना पुलिस मौके पर पहुंची और जांच शुरू की। सीन ऑफ क्राइम टीम भी बुलाई गई। इसके बाद शव को कब्जे में लेकर नागरिक अस्पताल की मोर्चरी में 72 घंटे के लिए सुरक्षित रखवा दिया गया ताकि पहचान हो सके। जांच अधिकारी एएसआई रणदीप सिंह ने बताया कि शव करीब 45 वर्षीय व्यक्ति का प्रतीत होता है। प्रारंभिक जांच में यह दुर्घटनावश नाले में गिरने से हुई मौत का मामला लग रहा है, हालांकि सटीक कारण पोस्टमार्टम रिपोर्ट के बाद ही स्पष्ट हो सकेगा। पहनावे से प्रवासी प्रतीत होता है। फिलहाल शव की पहचान के प्रयास जारी हैं। आसपास के इलाकों में गुमशुदगी के मामलों की जानकारी एकत्र की जा रही है। उधर, मामला सामने आने के बाद स्थानीय लोग भी हैरत में हैं। लोगों का कहना है कि यदि समय पर नालों की सफाई होती रहे तो शायद यह शव इतनी लंबी अवधि तक आंखों से ओझल न रहता।

बहादुरगढ़। झज्जर रोड पर डाबोदा गांव में गड्ढों से गुजरते वाहन। फोटो : हरिभूमि

भ्रष्टाचार के कारण आधार खो रहीं सड़कें

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

झज्जर-बहादुरगढ़ रोड की मरम्मत पर करीब 11 करोड़ रुपए खर्च किए जा रहे हैं। बावजूद इसके यहां गुजरने वाले अग्नि परीक्षा देकर सफर करते हैं। बहादुरगढ़ की की अंदरूनी सड़कों की हालत भी बेहद खस्ता है। सेक्टर-6 में भी सड़कों की हालत खस्ता हो गई है।

जी हां, सड़क निर्माण व मरम्मत के नाम पर करोड़ों रुपए खर्चने के बावजूद इलाके की सड़कें जल्द ही आधार खो रही हैं। कार्रवाई करने की बजाय शासन और प्रशासन कुंभकर्णी नींद सो रहा है। आरडब्ल्यूए के पूर्व प्रधान जयपाल सांगवान ने शनिवार को सेक्टर-6 की जर्जर सड़कों की वीडियो बनाकर इंटरनेट मीडिया पर वायरल कर दी। उनके अनुसार हर तरह की सड़क भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ रही हैं। कुछ समय पहले बनी सड़कों की स्थिति भी जर्जर हो रही है। बहादुरगढ़ से झज्जर रोड का निर्माण भी मैराथन प्रयासों के बाद शुरू हुआ। लेकिन अब भी नूना माजरा और डाबौदा गांव में हालात बेहद खराब हैं। यहां गहरे गड्ढों और उनमें भरे पानी में डूबकर ही वाहन आगे का सफर तय करते हैं। बादली रोड और बेरी रोड भी बीते दिनों निर्माण के दौरान ही उखड़ने लगी थी। निर्माण के चंद दिनों में ही सड़कें जर्जर हो रही हैं। लेकिन कोई कार्रवाई नहीं होना, शासन-प्रशासन की कार्यशैली पर सवाल उठा रहा है। एक तरफ सड़क बनती है, तो दूसरी तरफ सड़क उखड़ती है। राहगीर परेशान और बेबस हैं।

गांव लुकसर में विद्यार्थियों को करवाया योगाभ्यास

■ विद्यार्थियों को बलवान, विद्वान, चरित्रवान, आत्मनिर्भर व समर्थ बनने के लिए प्रेरित किया।

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

बहादुरगढ़। विद्यार्थियों को योगाभ्यास करवाते योगाचार्य जगदीश कुमार सहवाग। फोटो : हरिभूमि

लुक्सर के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में योगाचार्य जगदीश कुमार सहवाग द्वारा निःशुल्क योग-प्राणायाम शिविर लगाया गया। कैंप की अध्यक्षता अनिल कुमारी ने की। कार्यक्रम में विद्यार्थियों को बलवान, विद्वान, चरित्रवान, आत्मनिर्भर व समर्थ बनने के लिए प्रेरित किया। आचार्य जगदीश कुमार ने बताया कि योग एक विज्ञान है। योग नकारात्मक उर्जा को नष्ट करता है। योग से हमें आरोग्यता, मानसिक शांति व एकाग्रता की प्राप्ति होती है।इस अवसर रामपाल सिंह, उपदेश, मनोज कुमार, ओम प्रकाश, मंजू, ज्योति, मुनेश, रेनू, प्रदीप व सतपाल आदि उपस्थित रहे।

स्कूलों में विद्यार्थियों को किया जागरुक

बहादुरगढ़। पुलिस द्वारा नशे के दुष्प्रभाव, यातायात के नियम और महिला सुरक्षा के लिए लगातार जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। इंस्पेक्टर सतीश कुमार अपनी टीम के साथ विभिन्न शिक्षण संस्थानों में जाकर विद्यार्थियों को जानकारी दे रहे हैं। इंस्पेक्टर सतीश कुमार ने बताया कि हरियाणा पुलिस हमेशा नागरिकों के साथ है। महिलाओं की सुरक्षा के लिए पुलिस ने दुर्गा-शक्ति एप लॉन्च कर रखा है। इस एप का लाल बटन दबाने से तुरंत पुलिस मदद मिलेगी। इसलिए महिलाएं खुद को दुर्गा शक्ति एप पर रजिस्टर कर लें। महिला विरुद्ध होने वाले अपराध की सूचना किसी भी थाना के महिला हेल्प डेस्क, महिला थाना, महिला हेल्पलाइन नंबर 1091 या डायल 112 पर दी जा सकती है। सूचना पर पुलिस तुंरत कार्रवाई करेगी। उन्होंने बताया कि यातायात के नियमों का पालन करना बहुत जरूरी है। साथ ही उन्होंने नशे से होने वाले दुष्प्रभाव के बारे में भी विद्यार्थियों को बताया।

प्रासंगिक विषयों पर विद्यार्थियों ने किया ग्रुप डिस्कशन

झज्जर। महर्षि दयानंद सीनियर सैकेंडरी स्कूल, खुड्डन में सातवीं से बारहवीं कक्षा तक के विद्यार्थियों के लिए इंग्लिश ग्रुप डिस्कशन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। विद्यार्थियों ने ऑपरेशन सिंदूर, सोशल मीडिया, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, शादी के बाद लड़कियों की जॉब स्थिति, सोशल मीडिया प्रभाव तथा ऑनलाइन बनाम ऑफलाइन शिक्षा जैसे गंभीर और प्रासंगिक विषयों पर प्रभावशाली विचार प्रस्तुत किए।

प्रतिभागी समूहों में ऑपरेशन सिंदूर टॉपिक से शिक्षा, गरिमा, प्राची, स्वाति, सिया और ईशा, सोशल मीडिया टॉपिक से अन्नू, आरुषि, अंशिका, कुसुम, खुशी व सृष्टि, कृत्रिम बुद्धिमत्ता विषय से कोमल, प्रियांशी, भावना, लक्षिता, तन्नु व मानशी, शादी के बाद जॉब स्थिति टॉपिक से सुरुचि, खुशी, अन्नू और दिशा तथा ऑनलाइन बनाम ऑफलाइन शिक्षा टॉपिक से भावेश, वंश, प्रिंस, उदय, कर्मवीर व जतिन ने अपने विचार प्रस्तुत किए।

पर्यावरण संरक्षण नैतिक जिम्मेदारी: महंत

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

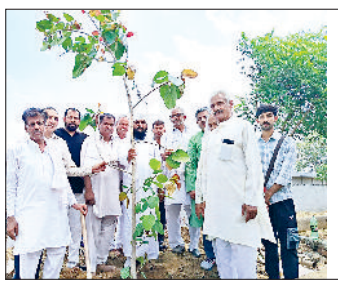

तपोभूमि जटेला आश्रम द्वारा प्रदेशभर में पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण की अलख जगाई जा रही है। शनिवार को महंत राजेंद्र दास के सानिध्य में महर्षि च्यवन ऋषि की तपोस्थली चिमनी गांव के राजकीय कन्या उच्च विद्यालय तथा डीघल गौशाला में पौधारोपण किया गया। कार्यक्रम में शिक्षकों व विद्यार्थियों ने पौधारोपण कर प्रकृति और संस्कृति को बचाने का संकल्प लिया। महंत राजेंद्र दास ने कहा कि पिछले कुछ सालों के दौरान उन्होंने प्रदेश के विभिन्न जिलों में हजारों पेड़-पौधे एवं त्रिवेणी लगाने का कार्य साध-संगत के सहयोग से पूरा किया है। उन्होंने कहा कि एक पेड़ लगाने को एक सौ पुत्रों के पालन-पोषण के समान माना गया है।

इस मौके महर्षि च्यवन ऋषि आश्रम के प्रधान रणबीर सिंह, शिव मंदिर के पुजारी तथा स्कूल के प्राचार्य राकेश उपस्थित रहे। दूसरी ओर डीघल स्थित गौशाला में पौधारोपण करते हुए महंत राजेंद्र दास ने कहा कि यदि

झज्जर। ग्रामीणों के साथ पौधारोपण करते हुए महंत राजेंद्र दास।

धरा पर मानव जीवन को बनाए रखना है तो हमें प्रकृति से मैत्रीपूर्ण भाव रखना चाहिए। पर्यावरण संरक्षण हम सबकी नैतिक जिम्मेदारी है।

ये रहे मौजूद

कार्यक्रम में गौशाला प्रबंधक सूबेदार सतबीर सिंह, बलवान सिंह, राजरूप राठी, रणजीत सिंह, बलवान सिंह, सरपंच सतीश कुमार, रिटायर्ड थानेदार धर्मवीर सिंह, रणबीर सिंह सहित अन्य भी उपस्थित रहे।

विजेता विद्यार्थियों को किया पुरस्कृत

कैंब्रिज इंटरनेशनल स्कूल में हिंदी सुलेख प्रतियोगिता का आयोजन

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

झज्जर। हिंदी सुलेख प्रतियोगिता के विजेता विद्यार्थियों के साथ उपस्थित निदेशक धर्मेंद्र जून। फोटो : हरिभूमि

कैंब्रिज इंटरनेशनल सीनियर सैकेंडरी स्कूल भदाना में शनिवार को तीसरी से आठवीं कक्षा तक के विद्यार्थियों के बीच हिंदी सुलेख प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता का उद्देश्य विद्यार्थियों में हिंदी भाषा के प्रति रुचि, लेखन कौशल एवं स्वच्छ सुलेख की भावना को बढ़ावा देना रहा।

प्रतियोगिता परिणामों में तीसरी कक्षा में दक्ष, तनीषा, आर्यन, पूर्व, सक्षम तथा अवनी, चौथी कक्षा में नैतिक, हार्दिक, समर, अद्विका, इशिका व विराज तथा पांचवीं कक्षा में मानवी कोडान, निधि, गर्वित, प्रतिज्ञा, दिव्या और चिराग ने उत्कृष्ट स्थान हासिल किया। इसी प्रकार छठी कक्षा में हितेन, दीक्षा व किंजल, सातवीं कक्षा में पलक, पायल, सीमांशी और ट्वीस्टि तथा आठवीं कक्षा में गीतिका, प्रियांशु, पूर्व, हिमांशु व तेजस्विनी ने अपने स्तर पर प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार जीता। सभी विजेता विद्यार्थियों को पुरस्कृत करते हुए विद्यालय निदेशक धर्मेंद्र जून ने कहा कि इस प्रकार की प्रतियोगिताएं न केवल विद्यार्थियों के लेखन को निखारती हैं बल्कि उनका आत्मविश्वास भी बढ़ाती हैं। इस मौके पर हिंदी अध्यापिका आशु, पिंकी, लेवल एचओडी इंचार्ज रितु जून, पिंकी सहरावत तथा विद्यालय कोर्डिनेटर प्रियंका शर्मा सहित अन्य भी उपस्थित रहे।

आरटीआई में मांगी गई जानकारी में खुलासा: तीन साल पहले खत्म हो चुका नियम 134 ए : हांडा

बहादुरगढ़। जी हां, हरियाणा के गरीब छात्र अब शिक्षा अधिकार कानून (134 ए) के अंतर्गत प्राइवेट स्कूलों में दाखिला नहीं ले सकेंगे। आरटीआई एक्ट के तहत मिली जानकारी के अनुसार हरियाणा सरकार 28 मार्च 2022 को यह निमय खत्म कर चुकी है। सामाजिक कार्यकर्ता सतपाल हाड़ा ने जनसूचना अधिकार कानून के तहत जानकारी मांगी थी कि हरियाणा के प्राइवेट स्कूलों में एक अप्रैल 2024 से शिक्षा अधिकार नियम 134ए के तहत कितने गरीब छात्रों का दाखिला किया गया। उनमें से कितने छात्र अगली कक्षा के लिए उत्तीर्ण हुए हैं।

मौलिक शिक्षा निदेशालय द्वारा 4 जुलाई को जानकारी भेजी गई है। इसके अनुसार हरियाणा सरकार के अतिरिक्त मुख्य सचिव द्वारा 28 मार्च 2022 से 134ए के नियम को समाप्त कर दिया गया है। इस नियम को हटाने से निजी स्कूल संचालकों को बड़ी राहत मिली है। हाड़ा के अनुसार आर्थिक रूप से कमजोर व गरीब परिवारों के छात्रों के लिए यह बड़ा झटका है। अब गरीब छात्रों का प्राइवेट स्कूलों में पढ़ने का सपना अधूरा रह जाएगा। हालांकि इस नियम के लागू रहते हुए भी गरीब छात्रों को निजी स्कूलों में दाखिला लेने के लिए संघर्ष करना पड़ता था। नियम 134ए के अनुसार प्राइवेट स्कूलों में गरीब छात्रों के लिए 10 प्रतिशत कोटा निर्धारित किया गया था।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
बहादुरगढ़ : सूरजमल वाली गली, गणपति ट्रैवलर्स के ऊपर, नजदीक टैक्सी स्टैंड, बहादुरगढ़
झज्जर :- पुराना बर्फ खाना रोड, शिव चौक, झज्जर
फोन : 8295738500, 8814999142, 8295157800, 9253681005

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।
हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।
तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5×8 सें.मी 10× 8 सें.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 2500/- रु. 3000/-

+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कार्ड रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
झज्जर : हरिभूमि कार्यालय, पुराना बर्फ खाना रोड, शिव चौक, फोन : 8295876400
बहादुरगढ़ : सुरजमल वाली गली, रोहतक रोड, गणपति ट्रैवल्स के ऊपर, 8295852900

हकीकत | गांव के आधे से अधिक घरों में नहीं है पेयजल कनेक्शन

जल जीवन मिशन की हर घर जल योजना से वंचित माजरा के ग्रामीण

■ गांव के एकमात्र जल घर की हालत भी दयनीय

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

झज्जर। जलघर परिसर की जर्जर हालत और पाइप लाइन दबाने के लिए उखाड़ी गई सड़क। फोटो : हरिभूमि

हर घर में स्वच्छत पेयजल उपलब्ध कराने के उद्देश्य से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा शुरू किए गए जल जीवन मिशन के अंतर्गत बेशक देशभर में सकारात्मक परिणाम रहे हों लेकिन जिले के गांव माजरा दूबलधन में यह योजना कारगर साबित नहीं हो पाई। आज भी गांव के आधे से अधिक घरों में पेयजल कनेक्शन नहीं है। ग्रामीणों का कहना है कि विभाग ने अब पेयजल कनेक्शन पर शुल्क लगाने को कहा है, जो न्याय संगत नहीं है। ग्रामीणों के अनुसार गांव की पेयजल व्यवस्था को देखें तो कनेक्शनशुदा मौहल्लों में भी सप्ताह में दो बार पेयजल उपलब्ध होता है। जबकि सरकार हर परिवार को 500 लीटर स्वच्छ पेयजल उपलब्ध करने के दावे पेश करती है। यहां की पेयजल व्यवस्था दयनीय हालत में है।

माजरा दूबलधन गांव के जलघर की दुर्दशा यहां की दयनीय पेयजल व्यवस्था का बयान करती है। इसकी चारदीवारी गिरने के बाद यह बेसहारा पशुओं की शरणस्थली बना हुआ है। पंपिंग चेंबर के चार पंप मोटरसेटों में से तीन की मोटरें खराब हो चुकी है। यह लीकेज के पानी से भरा रहने के कारण ऑपरेटर को भी करंट लगने का भय रहता है। जहां फिल्टर टैंक खराब पड़े हैं वहीं क्लीयर टैंक की क्षमता कम होने के कारण पेयजल वांछित मात्रा में तैयार नहीं हो पा रहा। क्लियर वॉटर पंपिंग सेट, ब्लीचिंग पाउडर होदी तथा जलघर के अंदर की पाइपलाइन भी जवाब दे गई है। पूर्व सरपंच नरेंद्र कादियान ने बताया कि कंधावाली व कालियाला के बूस्टिंग स्टेशनों पर पेयजल की सप्लाई पर्याप्त न होने के कारण कम मात्रा में पेयजल पंहुच रहा है। बूस्टरों की सप्लाई लाइन में भी 50 से अधिक अवैध कनेक्शन है, जिन पर जिला प्रशासन द्वारा कोई कार्रवाई नहीं की गई।

पांच वर्षों में आठ बार सीएम विंडो में लगा चुके गुहार : डॉक्टर दयानंद कादियान ने बताया कि जल घर की पेयजल व्यवस्था के दुरुस्तीकरण के लिए पिछले पांच वर्षों में वे आठ बार सीएम विंडो पर गुहार लगा चुके हैं लेकिन अभी तक पेयजल आपूर्ति व्यवस्था सुचारू नहीं हो पाई। ग्रामीण सत्य प्रकाश, विजय, पूर्व जिला पार्षद मास्टर जय भगवान आदि ने कहा कि गांव की पुरानी वाटर वर्क्स का सुधारीकरण करके माजरा बीमाण पंचायत के लिए एक और जल घर की व्यवस्था होनी चाहिए। पुराने जलघर के अंदर के टैंकों व पंप सिस्टम को सुधारते हुए पेयजल व्यवस्था सुचारू की जाए।

SHRI BALAJI INSTITUTE OF PARA MEDICAL SCIENCE
AUTHORIZED ADMISSION CENTRE OF MAA KAAMAL FOUNDATION
DR. S.K. SAINI Director
पिछले 25 वर्षों से लगातार जनसेवा में कार्यरत संस्थान।
फीस में 50% की विशेष छूट सभी के लिए सीमित समय के लिए
पहले आयें-पहले पायें। छात्रावास सुविधा। रविवार खुला है
DIPLOMA IN G.N.M. (MALE/FEMALE)
योग्यता :- 12th (किसी भी विषय में)
अवधि :- $3\frac{1}{2}$ वर्ष | कुल सीटें :- 60
नियमित कक्षायें ऑनलाईन व ऑफ लाईन दोनों मोड में।
आजही अपने प्रमाण पत्रों के साथ आकर मिलें।
अतिशिघ्र आवश्यकता है:-
•G.N.M. -20
•MEDICAL LAB. TECH.-20
जो थ्योरी व प्रेक्टिकल दोनों करवा सके।
Dr. S.K. Saini (Director)
41/29, चाणक्य पुरी, शीला सिनेमा के पीछे, रोहतक-124001
9254233221

हरिभूमि
रविवार भारती
haribhoomi.com
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
P-1
रोहतक,रविवार 20 जुलाई 2025

कवर स्टोरी
शिखर चंद जैन

कभी-कभी बन जाएं बच्चे
जी भर करें लाइफ एंज्वॉय

जीवन में सबसे सुहाने दिन बचपन के ही होते हैं। उस दौर से जुड़ी यादें हम कभी नहीं भूल पाते हैं। लेकिन ऐसा नहीं है कि हम बड़े हो गए तो अब बच्चों जैसी हरकतें नहीं कर सकते। जब भी मौका मिले, कुछ पल के लिए ही सही फिर से बच्चा बनकर देखिए, आपका तनाव गायब हो जाएगा और लाइफ को भरपूर एंज्वॉय कर पाएंगे।

अपनी जिंदगी में रोजमर्रा की जिम्मेदारियों के बोझ से व्यथित होकर अकसर हम अपने बचपन के दिनों की मस्ती, बेपरवाही और उन दिनों से जुड़ी कुछ खास बातों को याद करके उदास हो जाते हैं और अनायास ही बोल पड़ते हैं, *बचपन के दिन भी क्या दिन थे, उड़ते फिरते थे तितली बन।* कई बार मन में ऐसा भी खयाल आता है कि सब के सपनों को साकार करने में, दुनिया की उम्मीदों पर खरा उतरने की कोशिश में, कितना थक जाते हैं हम। हम सोचने लगते हैं कि काश, फिर से वो बेफिक्री आ जाए, जो बचपन के दिनों में हुआ करती थी। वाल्ट डिजनी ने कहा था, 'इस दुनिया की मुश्किल यह है कि बहुत सारे लोग बड़े हो गए हैं।'

नहीं भूलते वो मस्ती भरे दिन

इस दुनिया में शायद ही कोई शख्स होगा, जो अपने बचपन के दिनों में लौट जाने की ख्वाहिश ना रखता हो, जब जिम्मेदारियां कम थीं और खुशियां बेशुमार। होमवर्क को झटपट पूरा किया और घर से बाहर निकल गए कॉलोनी के पार्क में, मकान की छत पर या अपनी बालकनी में। कभी मिट्टी में लथपथ हुए, तो कभी बारिश के पानी में भीगे। बाजार से गेंद नहीं ला पाए तो रद्दी कागजों का गोला बनाकर खेलने लगे। महंगे खिलौने ना हों तो कागज की नाव या पतंग ही सही। बस मस्ती चाहिए थी, हर कीमत पर।

करें ऐसा, जिसमें आए मजा

आप चाहें तो आज अपने बचपन वाली उम्र भले वापस ना ला सकें, लेकिन 40, 50, 60 साल के होने के बावजूद दिल बचपन का ला सकते हैं। इससे न सिर्फ आपको अनूठी खुशी मिलेगी बल्कि स्ट्रेस लेवल भी कम होगा। याद कीजिए बचपन में हम कितने क्रिएटिव होते थे। हमारे पास हर चीज का विकल्प था। माचिस की बेकार डिब्बियों से टीवी जैसी आकृति बना लेते थे। अखबारों या पत्रिकाओं से कटी तस्वीरों को एक के बाद एक चिपका कर लंबा करना फिर उनके दोनों सिरे पर 2 तिनकों में लपेटना। फिर डिब्बी बीच से काटकर स्क्रीन बनाकर तिनके घुमाते हुए अलग-अलग तस्वीरें देखना। एक रुपए के लट्टू या 2 रुपए की गेंद से दिनभर खेलना, मस्ती करना। कागज की नाव बनाकर उसे बरसात के पानी में चलाना। चित्रकारी, डांस, कॉमिक्स पढ़ना, किसी गीत की पैरोडी बनाकर उसे गुनगुनाना हमें कितना प्रफुल्लित करता था। अब भी क्या बिगड़ा है! अब भी आप ऐसी क्रिएटिव एक्टिविटी अपनाएं, जो आपको खुशी दे। कुकिंग, डांसिंग, सिंगिंग, ड्राइंग कुछ भी कीजिए ताकि कुछ देर अपनी जिम्मेदारियों को भूल कर उसमें व्यस्त हो जाएं।

याद करिए गुजरे हुए दिन

किसी ने कहा है, *टूटे बर्तन को खिलौना बना लेते हैं, हम बच्चे हैं हर जगह आशियाना बना लेते हैं।* अगर इसी सिद्धांत पर आज भी चलें तो आप खूब खुश रहेंगे। अगर आप संयोगवश अभी उसी शहर में रहते हैं, जहां आपका जन्म हुआ और बचपन बीता तो कभी उस गली या मोहल्ले में जाइए, जहां आपने बचपन बिताया और उन दिनों को शिद्दत से याद कीजिए। उस मकान के अड़ोस-पड़ोस में रहने वाले लोगों से मिलिए, जहां आप रहते थे। उनसे खूब गपशप कीजिए। अगर आपका शहर बदल गया है तो आप गूगल की मदद से उस मोहल्ले, पार्क या स्कूल को देख सकते हैं, जहां आपने बचपन बिताया था, या फिर फेसबुक के माध्यम से अपने बचपन के दोस्तों को ढूंढ़ कर उनसे बातचीत कर सकते हैं। आपके पास बचपन की तस्वीरों का एल्बम हो तो उन तस्वीरों को देखिए और एक-एक तस्वीर से जुड़ी बातें याद कीजिए। वही वाली टॉफी खरीदकर फिर से खाइए, जो आपको खूब पसंद हुआ करती थी। उस मिठाई की दुकान पर जाकर समोसा या कचौरी खाइए, जहां के समोसे, कचौरी आप बचपने में बड़े चाव से खाते थे। आप कुछ देर के लिए ही सही अपने बचपन में पहुंच जाएंगे। यकीन मानिए, किसी की लिखी ये पंक्तियां आपको बरबस याद आ जाएंगी कि *नंगे पांव दौड़ते थे उस बचपन में। बढ़ते तजुर्बे ने पैरों में चुभन का एहसास करा दिया।*

खूब लें राइडिंग का मजा

अपने बचपन को लौटाने के लिए, उन पलों को फिर से जीने के लिए आज के जमाने में बेस्ट प्लेस हैं एम्यूजमेंट पार्क। एम्यूजमेंट पार्क में छोटे बच्चों को खेलते देखकर आपको अपना बचपन याद आ जाएगा। फिर तरह-तरह के राइड्स का आनंद लेना, वहां घूमना-फिरना और मस्ती करना आपके अंतर्मन को पूरी तरह खुश कर देगा। जब मौका मिले, आप ऐसी जगहों पर जरूर जाएं और राइड्स के साथ-साथ वहां मिलने वाले डिफरेंट फूड्स एंज्वॉय करना ना भूलें।

बचकानी हरकतों से ना झिझकें

किसी ने क्या खूब लिखा है, *झूठ बोलते थे फिर भी कितने सच्चे थे हम। यह उन दिनों की बात है जब बच्चे थे हम।* आपने देखा होगा कि बच्चों को जो पसंद आता है, वे उसे पूरी मस्ती के साथ करते हैं। चाहे खेलना-कूदना हो, गाना हो या नाचना हो। उन्हें इस बात की बिल्कुल परवाह नहीं रहती कि कोई क्या सोचेगा या क्या कहेगा? उनका पूरा ध्यान सिर्फ अपनी खुशी और मस्ती में होता है। आपको भी बिल्कुल वही बेपरवाही अपनानी होगी। अपने हमउम्र दोस्तों के साथ ठहाके मारकर हंसना, चुटकुले सुनाना, डांस करना या जो अच्छा लगता हो करें। यकीन मानिए आप अपनी उम्र काफी कम महसूस करने लगेंगे। इस बारे में मनोचिकित्सक डॉक्टर संजय गर्ग कहते हैं, 'हम वयस्क होकर भी बच्चों जैसी मस्ती कर सकते हैं, लेकिन इसके लिए बनावटी कंफर्ट जोन से बाहर आकर रियल कंफर्ट जोन में जाने के लिए मेंटली प्रिपेयर होना पड़ेगा।' *

लाइफस्टाइल / अंजू जैन

कुछ लोगों की आदत होती है कि वे हर छोटी-बड़ी बात पर जरूरत से ज्यादा सोच-विचार यानी ओवर थिंकिंग करते हैं। इससे वे कोई भी निर्णय जल्द नहीं ले पाते हैं। अगर आप भी ऐसी समस्या से ग्रस्त हैं तो यहां बताए जा रहे उपायों को आजमा सकते हैं।

क्या आप भी करते रहते हैं
हर बात पर ओवर थिंकिंग

यह सही है कि कोई भी काम अच्छी तरह सोच-विचार कर करना चाहिए। विचारशीलता और मनन करना अच्छी बात है। लेकिन जब आपका चिंतन, मनन या विचार मंथन जरूरत से ज्यादा समय तक या ज्यादा मात्रा में होने लगता है तो यह अनायास ही चिंता और ओवर थिंकिंग की आदत में तब्दील हो जाता है, जो लाइफस्टाइल को प्रभावित कर सकता है। इसलिए इस हैबिट से उबरने के लिए यहां बताई जा रही बातों पर अमल करें।

दूसरों पर ध्यान न लगाएं: हमारा मन अकसर बाहरी कारकों पर ध्यान केंद्रित करने पर उलझा रहता है। जब हम ईर्ष्या, दूसरों द्वारा हमारी आलोचना, दूसरों की सुख-समृद्धि पर ध्यान केंद्रित करते हैं तो हमारा मन अस्थिर और अशांत हो जाता है। इसलिए बेहतर होगा कि हमारी सोच और चिंतन का दायरा उन्हीं चीजों तक सीमित हो, जिन्हें हम सुधार, बदल या नियंत्रित कर सकते हैं। पुस्तक 'हेवनॉट गॉट टाइम फॉर द पेन' में लिखा गया है कि आपको अपने उलझे हुए विचारों को बदलना और उनका समाधान करना सीखना चाहिए। सबसे पहले जानिए कौन से विचार आपको पीड़ा देते हैं? उन विचारों को छोड़ने की कोशिश करें। ज्यादा सोचने से चीजें उलझ जाती हैं। इसलिए जीवन जीने और सोचने की प्रक्रिया को सरल रखें।

धैर्य बनाए रखें: यह एक मूलभूत सिद्धांत है कि आप जो अभी बोएंगे उसकी फसल आप बाद में काट पाएंगे। लेकिन हमारा चंचल स्वभाव इस बात को मानता नहीं और वह तुरंत परिणाम न मिलने पर विचलित हो जाता है। अपनी मेहनत के परिणाम के लिए जरा सा धैर्य रखिए फिर भी वांछित नतीजा ना मिले तो उस पर पुनर्विचार करिए।

भाग्य को न कोसें: मुश्किल परिस्थितियों में मनुष्य भाग्य को दोष देता है। लेकिन उसका भाग्य अधिकांशतः उसके चरित्र, जुनून, गलतियों और कमजोरी का ही प्रतिबिंब होता है। उसे अपने अवसरों से संतुष्ट रहना चाहिए और उनका फायदा उठाने की युक्ति पर विचार करते हुए स्वयं को बेहतर करने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

परफेक्शन की जिद छोड़ें: कई लोग पूर्णतावाद के शिकार होते हैं। वह किसी काम को करने के बाद भी बार-बार सोचते हैं कि इसे और कैसे बेहतर किया जाए? अगर आपकी भी यह समस्या है तो इससे उबरें। एक काम के बाद अपनी अगली प्राथमिकताओं पर ध्यान केंद्रित करें।

टू द पॉइंट सोचें: आप क्या सोच रहे हैं, क्यों सोच रहे हैं और किन मूल बिंदुओं पर आपका चिंतन है, यह पूरी तरह स्पष्ट होना चाहिए। इसके लिए बिंदुओं को लिख लीजिए। विभिन्न पहलुओं पर गौर कीजिए और फिर सोचिए। ऐसी सोच आपको निर्णय लेने में मददगार होगी और समय भी नष्ट नहीं होगा।

अनुभवी लोगों से मिलें: विचार मंथन की प्रक्रिया अगर लंबी खिंच रही हो और आप किसी निर्णय पर नहीं पहुंच पा रहे हों तो अनुभवी व्यक्तियों से सलाह लें। कुछ परिस्थितियों में सबसे अच्छा यह होता है कि आप अपनी गट फीलिंग का उपयोग करें। आपका अंतर्मन यानी सिक्स्थ सेंस जो कहे उसे ही सही मानें। कई शोध हो चुके हैं, जिनसे पता चलता है कि गट फीलिंग और लॉजिकल सोच का संयोजन सही निर्णय लेने में मददगार होता है।

मन को थकाने से बचें: आपको हर दिन छोटे-बड़े सैकड़ों निर्णय लेने होते हैं, जो आपके मन को थका सकते हैं। ऐसे में बहुत जरूरी है कि अपने दिमाग की शक्ति को बचाने के लिए एक दिनचर्या बनाएं, जिसमें उलझे हुए विषयों पर विचार के लिए एक वक्त तय कर दें। इसी समय जरूरी बातों पर निर्णय लें। बेवजह विचारों के सागर में डूबे रहना समय और ऊर्जा की बर्बादी है। इसकी बजाय सकारात्मक सोच के बीज बोएं और जरूरी चीजों पर विचार करें। पुस्तक 'डेवलपिंग इन टू, हेल्दी थिंकर्स' में कहा गया है कि सकारात्मक वाक्य हमें एक खुशहाल और भयमुक्त जीवन बनाने में प्रभावशाली रूप से मदद करते हैं। अपनी आवश्यकताओं के अनुसार सूक्तियां चुनें या अपने प्रेरक वाक्यांश बनाएं और उन पर अमल करें।

समय पर छोड़ दें: अगर आप यह सोचकर चिंतित रहते हैं कि पता नहीं कोई समस्या सुलझेगी या नहीं, तो याद करें अतीत में आपने कितनी ही समस्याओं को सुलझाया है। इससे आपकी थिंकिंग पॉजिटिव साइड में चली जाएगी। इसके साथ ही आपको यह भी याद रखना चाहिए कि कई समस्याएं तो समय के साथ सुलझ जाती हैं। ओवर थिंकिंग से बचने का सबसे आसान तरीका पुस्तक 'स्टॉप लुक एंड लिसन' में बताया गया है। इस पुस्तक में विस्तार से समझाया गया है कि आप वर्तमान में जिएं और उस क्षण को पूरी तरह महसूस करें। जिंदगी को एक तय उद्देश्य के साथ आगे बढ़ाएं। कर्म पर विश्वास करें और अपनी मानसिक स्थिति पर नियंत्रण रखें। *

सजेशन
मोनिका शर्मा

स्मार्ट गैजेट्स से दूर रहकर भी
मिल सकती है खुशी-सुकून

हालांकि आज के दौर में स्मार्ट गैजेट्स से पूरी तरह दूर रहना तो संभव नहीं रह गया है। लेकिन अगर केवल इस पर इंटरनेट यूज को कंट्रोल कर लें तो भी खुशी और सुकून हासिल कर सकते हैं।

सब कुछ पा लेने से ही सुकून नहीं मिलता। खुशी का मतलब दुनिया भर से जुड़े रहना ही नहीं होता। टेक्नीक के घेरे में घिरी आज की जिंदगी में स्मार्ट तकनीकों से लैस गैजेट्स से दूरी बनाना भी मन को सुख दे सकता है। वर्चुअल दुनिया में अनजान लोगों तक से जुड़ने और हर पल जुड़े रहने के बजाय, स्क्रीन की मौजूदगी पर लगाम लगाना भी मन को खुशी दे सकता है। टिक-टिक की आवाज पर हमारा ध्यान भटकाते नोटिफिकेशंस को बंद रखना भी मन को शांत सहज रख सकता है। कनाडा और अमेरिका में हुआ एक ताजा अध्ययन नोटिफिकेशंस की टोन पर भागते मन की लगाम थामकर असली दुनिया में सच्चे सुख को जीने की बात पुख्ता करता है।

टिक-टिक पर कंट्रोल के लाभ: बीते कुछ वर्षों में स्मार्टफोन का साथ एक आदत बन गया है। बहुत से लोगों के लिए तो स्क्रीन में झांकते रहना किसी लत से कम नहीं। वहीं इस आदत के खामियाजों को समझकर खुद को वर्चुअल व्यस्तता से बचाने के प्रयास भी खूब किए जा रहे हैं। हालांकि आज के समय में फोन एक जरूरत भी बन गया है। इससे पूरी तरह दूर रहना भी मुश्किल है। पर इसके लती बनने से तो बचा जा सकता है। अमेरिका और कनाडा की कुछ यूनिवर्सिटीज द्वारा एक महीने तक 467 आईफोन यूजर्स पर की गई एक रिसर्च इस मोर्चे पर सही और सहज राह दिखाती है। असल में इस स्टडी में शामिल होने वाले लोगों को फोन का उपयोग पूरी तरह बंद करने की बजाय इंटरनेट का इस्तेमाल न करने को कहा गया था। इन लोगों के फोन में बाकायदा एक एप डाउनलोड की गई थी, जो फोन पर मोबाइल इंटरनेट ब्लॉक करने से जुड़ी थी। अध्ययन में सामने आया कि इंटरनेट बंद रखना लोगों का फोकस बढ़ाने और दिमाग भी जवान करने में मददगार साबित हो सकता है। इतना ही नहीं कुछ दिनों तक अगर फोन में ऐसी सेटिंग रखी जाए तो मूड में भी सुधार हो सकता है। इंसान का दिमाग तो 10 साल तक जवान हो सकता है। स्पष्ट देखने में भी आ रहा है कि पल-पल मिलते नोटिफिकेशंस यूजर्स का ध्यान भटकाने और मेमोरी लॉस का कारण बन रहे हैं। ऐसे में इंटरनेट सेटिंग्स के माध्यम से टिक-टिक पर लगाम लगाने के बहुत लाभ यूजर्स को मिल सकते हैं। आम लोगों के लिए भी खुद को स्मार्ट गैजेट्स से दूर रखने के लिए कुछ समय तक मोबाइल इंटरनेट बंद रखने का यह रास्ता अपनाने योग्य है।

सेटिंग्स का खास असर: फोन की सेटिंग्स चेंज करना कोई बड़ा बदलाव प्रतीत नहीं होता पर इसका असर बहुत अहम है। एक महीने की इस रिसर्च में दो हफ्ते बाद ही लोगों पर मोबाइल इंटरनेट बंद रखने की साधारण सी सेटिंग्स का असाधारण प्रभाव दिखने लगा। अध्ययन में शामिल लोगों ने माना कि वे पहले से ज्यादा खुश हैं। साथ ही अपनी जिंदगी को लेकर उनमें संतुष्टि का भाव भी बढ़ गया है। टिक-टिक या कोई और नोटिफिकेशन टोन को बंद रखने से यूजर्स को ना केवल मानसिक तौर पर स्वस्थ महसूस हुआ बल्कि यह बेहतरी से जुड़े ये बदलाव कॉग्नेटिव बिहेवियरल थेरेपी के बराबर थे। रिसर्च में शामिल लोगों ने बताया कि फोकस्ड रहने को लेकर भी उन्होंने पॉजिटिव बदलाव महसूस किए। साथ ही अटेंशन टेस्ट में इन लोगों के दिमाग ने अपने से 10 साल जवान लोगों के बराबर परफॉर्म किया।

हर फ्रंट पर पॉजिटिव बदलाव: इस स्टडी में सामने आया कि लोगों ने फोन छोड़कर अपने से जुड़े इंसानों के साथ ज्यादा समय बिताया। अच्छे से नींद लेने और एक्सरसाइज करने पर भी ध्यान दिया। लोगों ने हर रात औसतन 17 मिनट अधिक नींद ली। इन नतीजों को देखते हुए रिसर्चर का कहना है कि स्मार्ट फोन से पूरी तरह दूरी नहीं बनाई जा सकती पर इसके इस्तेमाल में बैलेंस रखना बहुत आवश्यक है। यह बहुत व्यावहारिक सा पक्ष है कि हर पल मिलते नोटिफिकेशंस से दूर रहना मानसिक ठहराव देने का काम करता है। यह ठहराव एकाग्रता की सौगात देता है। फोकस्ड रहने वाला इंसान कामकाजी संसार में बेहतर परफॉर्म कर पाता है। *

नवगीत
माणिक विश्वकर्मा 'नवरंग'

कांच के बर्तन

नहीं होते भरोसेमंद
कांच के बर्तन
करने लगते हैं हवा के
सामने नर्तन।
फिजूल दूध को खौलाते रहे
मथ डाले
निकाल लेते हैं मलाई
बेचने वाले
हक में आता है केताओं
के अब खुरचन।
सिर्फ बदली हैं तख्तियां
बदले हैं मुखड़े
नई नहीं है संरचना
बदले हैं टुकड़े
हुआ नहीं है सालों से
कोई परिवर्तन।
काटने की लगी है होड़
अंधभक्तों में
फल और फूल नहीं दिखते
अब दरख्तों में
मांगने के लिए
होता है मिथ्या अर्चन।
स्वयंभू गुरुओं के चेलों
की हैं दुकानें
बखान करते हैं बौद्धिकता
के अफसाने
अपने जैसों के आगे
करते हैं गर्जन।
घरों को लूट रहे हैं
उनके रखवाले
जुबां पे आम आदमी के
पड़े हैं ताले
असत्य बोला नहीं करते
कभी भी दरपन।

व्यंग्य/ अंशुमाली रस्तोगी

सोना और चोर

लोग सोने के महंगा होने पर, अदृश्य डर के कारण, उसे लॉकर में डलवा देते हैं, जबकि मैंने सोना घर में ही रख छोड़ा है। वो इसलिए कल को अगर चोर मेरे घर चोरी करने आता है तो उसे निराश होकर न लौटना पड़े।

सोना जब देखो तब बमचक मचाए ही रहता है। ऐसे में न खरीदने वालों के हाथ आ पाता रहा है, न चोरों के। इससे सबसे अधिक 'आर्थिक नुकसान' हमारे चोर भाइयों का होता है। बेचारे न सोना चुरा पाते हैं, न बेच। महंगे होने के कारण लोगों ने सोना पहनना भी कम कर दिया है। और घर में जो रखा होता है, उसे लॉकर में डलवा देते हैं। अब चोर किस मुंह से किसी के घर चोरी करने जाए। सोना ही एक ऐसा आइटम है, जिसे चुराकर वे अच्छी कमाई कर लेते हैं। अपना घर चला लेते हैं। लेकिन उस पर भी अकसर ही ग्रहण लग जाता है। इसलिए छिनैती की घटनाएं भी अब घट गई हैं। वरना पहले तो चेन-कुंडल खींचने की वारदातें आए दिन अखबारों में पढ़ने को मिल जाया करती थीं। महिलाएं भी बड़ी अजीब हैं। अरे, अपने लिए नहीं तो कम से कम चोरों की भलाई के लिए ही सोना पहन कर घर से बाहर निकला करें। ताकि उन बेचारों की भी दुकान चलती रहे। एक यही तो उनकी कमाई का जरिया है, उस पर भी महंगाई की मार। घोर अन्याय है चोर बिरादरी के साथ। मैं इसकी सख्त शब्दों में मजम्मत करता हूं। सरकार को इस बारे में जरूर कुछ सोच-विचार करना चाहिए।

सोने के संग समस्या यही है कि वो कब बढ़ जाता है, कुछ पता नहीं चलता। रात भर में अपना दांव खेल देता है। लोगों ने भी सोने के प्रति ना जाने क्या मोह पाल रखा है कि रोटी पानी में डुबोकर खा लेंगे, लेकिन सोना जरूर खरीदेंगे। चाहे घर में खुद के रहने के लिए जगह न हो पर सोना जरूर रखेंगे। पहनने को चाहे ढंग के कपड़े न हों पर सोना जरूर पहनेंगे। मतलब हद है। यह नहीं होता कि थोड़ा सोना चोरों को भी दे दें ताकि उनका घर-परिवार भी चलता रहे। किसी गरीब की भलाई करने में दुआएं ही मिलती हैं।

चोरी करना कितना जोखिम भरा काम है, यह तो कोई चोर से ही पूछे। किसी अनजान घर में जाकर चुराई करना, मेरे तो सोचकर ही पसीने छूट जाते हैं। यहां मैं कलम चलाकर ही खुद को ऊंचा लेखक मानता हूं। अजी, कलम का क्या है कोई भी चला सकता है। परंतु चोरी हर कोई नहीं कर सकता। इसके लिए जिगर और इच्छाशक्ति दोनों की भरपूर जरूरत होती है। कभी-कभी तो चोर मुझे, लेखकों से कहीं अधिक सरल और सच्चे जान पड़ते हैं। लेखक चूंकि बुद्धिजीवी होता है, इसलिए हर समय शब्दों-भाषा का जाल बुनता रहता है। चोर सिर्फ चोर होता है। अपने धंधे से मतलब रखता है। यहां-वहां अपनी टांग नहीं फंसाता फिरता। वो तो खामख्वाह मैं लेखक बन गया, जबकि मुझे तो चोर ही बनना चाहिए था।

लोग सोने के महंगा होने पर, अदृश्य डर के कारण, उसे लॉकर में डलवा देते हैं, जबकि मैंने सोना घर में ही रख छोड़ा है। वो इसलिए कल को अगर चोर मेरे घर चोरी करने आता है तो उसे निराश होकर न लौटना पड़े। उसका भी घर-परिवार चलता रहे। वो मुझे दुआएं दे। सोने का क्या है, वो तो पैसे की तरह हाथ का मैल है। आज है, कल नहीं। बल्कि मैं तो कहता हूं, देश के हर नागरिक को चोरों का ख्याल रखना चाहिए। ज्यादा नहीं तो महीने में दो चोरियां तो अपने घर में करवा ही लेनी चाहिए। बड़े-बुजुर्ग भी कह गए हैं, धन बांटने से बढ़ता है।

सही बोल रहा हूं, सोने का चोरी चला जाना पुण्य का काम है। इससे घर में बरकत बनी रहती है। सोने का महंगा होना चोरों के पेट पर लात है।

मुझे आम आदमी की सोने के पीछे दीवानगी कभी समझ नहीं आई। जिसे देखो वो सोना जोड़ने में लगा पड़ा है। कोई शौक के लिए जोड़ रहा है तो कोई शादी के लिए जोड़ रहा है तो कोई आड़े वक्त के लिए जोड़ रहा है। अमां, क्या कीजिएगा इतना सोना जोड़कर। जबकि साथ कुछ नहीं ले जाना है फिर भी...। यही सोना जब चोरी चला जाता है तब रोते हैं। चोरों को बद्दुआएं देते हैं। थाने में रपट लिखवाते हैं। बेवजह पुलिस वालों को भी परेशान करते हैं। मैं तो फिलहाल इस प्रतीक्षा में हूं कि सोना जल्द थोड़ा और नीचे आ जाए और चोरों का कारोबार फिर से चल निकले। मुझे यह कतई अच्छा नहीं लगता कि हम खाएं और चोर बेचारे हमारा मुंह ताकें। उनका दाना-पानी भी चलता रहे तो क्या हर्ज है। *

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

सर्जना और व्याख्या

वरिष्ठ लेखक-पत्रकार अवधेश श्रीवास्तव साहित्य के गंभीर पाठक-विवेचक भी हैं। लंबे समय से वे विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के लिए पुस्तक समीक्षाएं लिखते रहे हैं। हाल में उनकी लिखी समीक्षाओं का संकलन 'सर्जना और व्याख्या' पुस्तकाकार में आया है। इसमें उनके द्वारा लिखी गई तीस पुस्तकों की समीक्षाएं संकलित हैं। अवधेश श्रीवास्तव पुस्तकों का मूल्यांकन पूरी गंभीरता से करते हैं। वे अगर किसी किताब की विशिष्टताओं को रेखांकित करते हैं तो उसकी खामियों पर भी अंगुली रखने से परहेज नहीं करते हैं। यहां विष्णु प्रभाकर, भगवती चरण वर्मा, असगर वजाहत, अलका सरावगी, गोविंद मिश्र, शिवमूर्ति, राम दरश मिश्र, ओम निश्चल आदि की पुस्तकों के अलावा अर्नेस्ट हेमिंग्वे के अनूदित उपन्यास 'शस्त्र विदाई' की समीक्षा भी पढ़ी जा सकती है। *

पुस्तक: सर्जना और व्याख्या (समीक्षात्मक लेख)
लेखक: अवधेश श्रीवास्तव, मूल्य: 250 रुपए,
प्रकाशक: शांभवी प्रकाशन, गाजियाबाद

महादेव शिव की दिव्य-भव्य प्रतिमाएं

आस्था / शिखर चंद जैन

महादेव शिव को समर्पित सावन के विशेष महीने में भक्तगण भगवान शिव से जुड़े तीर्थ-स्थलों की यात्रा करते हैं। इस अवसर पर हम आपको अपने देश के विभिन्न स्थानों में स्थित भगवान शिव की कुछ दिव्य और भव्य प्रतिमाओं के बारे में बता रहे हैं। इनके दर्शन मात्र से विलक्षण शांति प्राप्त होती है।

मुरुदेश्वर महादेव कर्नाटक

कर्नाटक के उत्तरी हिस्से के भटकल तहसील में स्थित है मुरुदेश्वर महादेव मंदिर। 'मुरुदेश्वर' भगवान शिव का ही एक नाम है। यहां महादेव की जो मूर्ति स्थापित की गई है, वह देश-दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी शिव प्रतिमा है। यह प्रतिमा 123 फीट ऊंची है। इसे बनाने में 2 साल का वक्त लगा। मुरुदेश्वर मंदिर अरब सागर के तट पर स्थित है। यह तीन ओर से अरब सागर से घिरा हुआ है। यह स्थल मंगलौर से 165 किलोमीटर दूर स्थित है। यहां साल भर भक्तों और पर्यटकों का आगमन होता रहता है। *

आदियोगी शिव, कोयंबटूर

भगवान शिव के मुख की दुनिया में सबसे बड़ी प्रतिमा है आदियोगी शिव प्रतिमा। कोयंबटूर से करीब 30 किलोमीटर दूर स्थित यह शिव प्रतिमा 112 फीट ऊंची है। इसका वजन 500 टन है। इसका नाम गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में भी दर्ज किया गया है। इस प्रतिमा को बनाने में सीमेंट, कंक्रीट, बालू आदि किसी भी वस्तु का इस्तेमाल नहीं किया गया है बल्कि इसे धातु के टुकड़ों से बनाया गया है। इसके निर्माण में ढाई साल लगे। इस मंदिर के निर्माण से संबद्ध संस्था ईशा फाउंडेशन के अनुसार आदियोगी शिव का यह चेहरा मुक्ति का प्रतीक है। यह शिव प्रतिमा योग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से बनाई गई है। *

सर्वेश्वर महादेव, वडोदरा

गुजरात के वडोदरा शहर के मध्य में स्थित है सूरसागर झील और इस झील के बीचों-बीच विराजमान हैं सर्वेश्वर महादेव। 78 फीट गहरे 23 खंभों पर टिकी सर्वेश्वर महादेव की यह मूर्ति 120 फीट ऊंची है। इसके निर्माण में 6 वर्ष लगे थे। यह स्थान अहमदाबाद से 112 किलोमीटर दूर है। शिव भक्तों के लिए यह मंदिर आस्था का केंद्र तो है ही, अन्य धर्मावलंबियों एवं पर्यटकों के लिए भी आकर्षण का केंद्र है। इस मंदिर के आस-पास भी बहुत कुछ दर्शनीय है। *

सिद्धेश्वर महादेव, सिक्किम

सिक्किम के सोलोफोक पहाड़ी पर सिद्धेश्वर महादेव यानी भगवान शिव की बैठी हुई मुद्रा में लगभग 87 फीट ऊंची प्रतिमा विराजमान है। आधार से इसकी ऊंचाई 108 फीट है। सिक्किम के लोग इसे नामची महादेव और भगवान किरतेश्वर के नाम से भी पूजते हैं। सफेद रंग की यह मूर्ति आस्थावान शिव भक्तों के साथ-साथ पर्यटकों को भी आकृष्ट करती है। यहां भगवान शिव के बारह ज्योतिर्लिंगों के साथ-साथ चार धामों- बद्रीनाथ, जगन्नाथ, द्वारका और रामेश्वरम की प्रतिकृतियां भी स्थापित हैं। *

हर की पैड़ी के शिव, हरिद्वार

हरिद्वार में हर की पैड़ी मंदिर बेहद लोकप्रिय श्रद्धा का केंद्र है। इसके ठीक सामने मौजूद है स्वामी विवेकानंद पार्क जहां भगवान शिव की 100 फीट ऊंची प्रतिमा विराजमान है। यहां देर शाम तक ठहर कर आप महादेव शिव के दर्शन के साथ-साथ गंगा आरती का भव्य नजारा भी देख सकते हैं। *

बेंगलुरु शिवोहम शिव मंदिर

ये शिव प्रतिमाएं भी हैं भव्य

यहां वर्णित भगवान शिव की विशाल एवं दिव्य प्रतिमाओं के साथ-साथ देश में कई अन्य स्थानों पर भी शिव के विशाल स्वरूप के दर्शन होते हैं।

- जबलपुर (मध्य प्रदेश) के कछार शहर में 76 फीट लंबी शिव प्रतिमा मौजूद है। इसके चारों तरफ 12 ज्योतिर्लिंग भी विराजित किए गए हैं।
- बेंगलुरु में शिवोहम शिव मंदिर में मौजूद शिव प्रतिमा 65.6 फीट ऊंची है। यहां पृष्ठभूमि में हिमालय की प्रतिकृति बनाई गई है।
- गुजरात के द्वारका में मौजूद है नागेश्वर ज्योतिर्लिंग मंदिर। यहां विराजित शिव प्रतिमा 82 फीट ऊंची है।

गुजरात नागेश्वर ज्योतिर्लिंग मंदिर

सेल्फ इंप्रूवमेंट / जोगिंदर रोहिल्ला

सफलता के लिए सीखनी होगी समय प्रबंधन की कला

समय की कद्र करना ही सफलता की पहली सीढ़ी है। पैसा, शोहरत, संबंध, सब कुछ दोबारा पाया जा सकता है, लेकिन एक बार गया हुआ समय फिर नहीं आता। इसलिए अगर सफल होना चाहते हैं, तो समय प्रबंधन की कला सीखनी ही होगी।

भारत के प्रसिद्ध महान आचार्य चाणक्य ने कहा था, 'पैसा दोबारा कमाया जा सकता है, लेकिन गया हुआ समय कभी वापस नहीं आता।'

सच है, हम सभी के पास दिन में 24 घंटे होते हैं। किसी के पास न ज्यादा, न कम। इसके बावजूद कुछ लोग हर दिन नई ऊंचाइयों को छूते हैं, जबकि बहुत सारे लोग समय की कमी की शिकायत करते रहते हैं। इसका कारण सीधा और सपष्ट है- सफल लोग समय को सिर्फ बिताते नहीं, वे अच्छे से समय को मैनेज करते हैं। हालांकि आज की तेज रफ्तार जिंदगी में लोग सबसे ज्यादा जिस चीज की कमी महसूस करते हैं, वह है- समय। घर-ऑफिस का वर्क प्रेशर, सोशल मीडिया, परिवार की जिम्मेदारियों में उलझकर लोग यही कहते हैं, क्या करें समय ही नहीं मिलता। पर सच यह है कि समय मिलता नहीं, समय मैनेज करना होता है। इसीलिए ब्रायन ट्रेसी ने कहा है, 'जो लोग अपने समय को नियंत्रित नहीं करते, वे अपने जीवन को नियंत्रित नहीं कर सकते।'

सक्सेसफुल टेनिस खिलाड़ी रोजर फेडरर के सफल बनने के पीछे केवल उनकी प्रतिभा ही नहीं, बल्कि उनका अनुशासित समय प्रबंधन भी था। उन्होंने अपनी ट्रेनिंग, रिकवरी और निजी जीवन-तीनों को संतुलन के साथ समयबद्ध किया, जिससे उनका प्रदर्शन लगातार ऊंचाइयों पर बना रहा।

समय प्रबंधन क्यों है जरूरी: हमें समझना होगा कि समय सीमित है। औसतन इंसान के पास सिर्फ 4000 हफ्ते होते हैं। घर-बाहर के काम कभी खत्म नहीं होते, इसलिए यह तय करना जरूरी है कि किस काम को पहले करना है और किसे बाद में?

आपको समझना होगा कि संतुलित जीवन में करियर, स्वास्थ्य, रिश्ते, खुशी सभी के लिए समय चाहिए होता है। जब हर चीज की प्लानिंग होती है तो इससे तनाव कम होता है, मन शांत रहता है।

समय प्रबंधन के तरीके: समय प्रबंधन करना बहुत कठिन नहीं होता है, इसके लिए कुछ बातों का ध्यान रखना होता है।

प्राथमिकता तय करें: जो काम जरूरी है, वही पहले करें। अर्जेंट और इंपॉर्टेंट का अंतर समझें। इसी तरह यह भी बहुत जरूरी है कि अनावश्यक कामों को मना करना सीखें। ऐसे काम करने में अपना टाइम वेस्ट ना करें।

प्लानिंग करें: काम शुरू करने के पहले से ही आपका हर महीना, हफ्ता और हर दिन प्लान होना चाहिए। अगर ये बहुत ज्यादा लगता है तो हर हफ्ते और हर दिन की प्लानिंग से शुरू कीजिए। अपने कार्यों को एक निश्चित समय और क्रम में इस तरह से प्लान कीजिए कि हर जरूरी काम समय पर, सही ध्यान और ऊर्जा के साथ पूरा किया जा सके। याद रखिए कि आपको प्लानिंग में जिंदगी के हर पहलू का ध्यान रखना है। जैसे- करियर, हेल्थ, परिवार, हॉबी।

इवेल्यूएशन करें: हर वीक के अंत में अपना इवेल्यूएशन खुद करें। स्वयं से पूछें कि इस हफ्ते मेरी उपलब्धियां कैसी रहीं? क्या मैं अपने समय का सदुपयोग कर पाया? क्या इसमें और सुधार की जरूरत है? इन सब प्रश्नों के उत्तर आपको हर हफ्ते अपने टाइम मैनेजमेंट को इंप्रूव करने में मदद करेंगे।

ना करें टाइम वेस्ट: आज के समय में सोशल मीडिया लोगों का समय वेस्ट करने वाला सबसे बड़ा जरिया बन गया है। हम अनजाने में दिन के कई घंटे इंस्टाग्राम, व्हाट्सएप, यू ट्यूब या फेसबुक पर बिता देते हैं। जरूरी है कि हम इन चीजों के इस्तेमाल पर नियंत्रण रखें। आप खुद तय कर सकते हैं कि दिन में कितना समय इनको देना है। यह समझना जरूरी है कि हर काम के लिए 'हां' कहना जिम्मेदारी नहीं, कमजोरी बन सकता है। जब जरूरत हो, तो 'ना' कहना सीखें, ताकि आप अपने समय और ऊर्जा को सही दिशा में लगा सकें। *

यादें

अशोक वाधवाणी

हिंदी सिनेमा के आरंभिक दौर से ही रोमांटिक दृश्यों को प्रभावी बनाने के लिए सावन और बारिश के माहौल का इस्तेमाल किया जाता रहा है। ऐसे ही एक यादगार गीत 'रिमझिम गिरे सावन' से कुछ दिलचस्प बातें जुड़ी हुई हैं।

कुछ इस तरह फिल्माया गया था पॉपुलर गाना रिमझिम गिरे सावन...

सावन और बरसात का हिंदी फिल्मों से पुराना कनेक्शन रहा है। बीते दौर की ब्लैक एंड व्हाइट फिल्मों से लेकर आज तक हिंदी फिल्मों में बरसात में भीगते हुए नायक-नायिका पर रोमांटिक गाने फिल्माने की परंपरा चल रही है। इस तरह के प्रयोग अकसर ही फिल्म और गाने को हिट कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। बारिश में फिल्माए गए कई गाने इतने लोकप्रिय हुए हैं कि आज भी बारिश के मौसम में भीगने पर आम लोगों को भी उनकी पंक्तियां याद आ ही जाती हैं। ऐसे ही यादगार गानों की कड़ी में शामिल है वर्ष 1979 में रिलीज हुई फिल्म 'मंजिल' के का वो सुपरहिट गीत 'रिमझिम गिरे सावन...', जिसे फिल्माया गया था अमिताभ बच्चन और मौसमी चटर्जी पर। देखा जाए तो इस गाने की लोकप्रियता में बरसात ने उत्प्रेरक का काम किया। बासु चटर्जी के निर्देशन में बनी फिल्म 'मंजिल' मृणाल सेन द्वारा निर्देशित बांग्ला फिल्म 'आकाश कुसुम' (1965) का रीमेक है। इस फिल्म की कहानी को दर्शकों, समीक्षकों की समान रूप से सराहना मिली थी।

बैकग्राउंड में बजता है गाना: फिल्म 'मंजिल' के इस लोकप्रिय-कर्णप्रिय गीत 'रिमझिन गिरे सावन, सुलग-सुलग जाए मन...' को लिखा था योगेश ने और इसका सुरीला संगीत दिया था आर.डी. बर्मन ने। दिलचस्प बात यह है कि इस गाने को लता मंगेशकर और किशोर कुमार ने आवाज दी है, तो भी यह युगल गीत नहीं है। ये गाना अमिताभ बच्चन और मौसमी चटर्जी पर बारिश में भीगते हुए फिल्माया गया है। लेकिन पर्दे पर इन दोनों कलाकारों को यह गाना गाते हुए नहीं

दिखाया गया है। पूरे सीक्वेंस के दौरान केवल बैकग्राउंड में बजता रहता है- रिमझिम गिरे सावन...।

असली बारिश में फिल्माया गया: इस लोकप्रिय गीत के साथ एक दिलचस्प बात यह भी जुड़ी है कि इसको मुंबई की असली बारिश में अलग-अलग लोकेशंस पर तीन दिनों तक पिक्चराइज किया गया था। मुंबई के मरीन ड्राइव, गिरगांव चौपाटी, फोर्ट, गेट वे ऑफ इंडिया, ओवल मैदान, हुतात्मा चौक आदि दक्षिण मुंबई के दर्शनीय स्थानों पर इसे शूट किया गया। अमिताभ और मौसमी ने भी इस गाने में स्वाभाविकता लाने की कोशिश की, जिसमें दोनों सफल भी हुए। सूट, टाई पहने अमिताभ और सीधी-सादी साड़ी पहने मौसमी बिना छाते के बारिश में भीगते, अठखेलियां करते हुए टहलते दिखते हैं। बारिश से बचने के लिए इनके पास कोई छाता या रेन कोट नहीं होता है। वहीं हाथों में छाता थामे हुए लोगों का हुजूम, इन्हें भीगते हुए देखता है।

गाने का हर दृश्य है कमाल: इस गाने में बेहद सादगीपूर्ण ढंग से बारिश की मस्ती और प्रेम की भावना को दर्शाया गया है। हाथों में हाथ डाले प्रेमियों की भांति अमिताभ-मौसमी का भीगना बहुत अच्छा लगता है। समंदर किनारे बनी दीवार पर अमिताभ का हाथ पकड़े हुए मौसमी का चलना-फिरना, अमिताभ का दोनों हाथों से पकड़ कर मौसमी को नीचे उतारना, चेहरे पर जमी बारिश की बूंदों को मौसमी द्वारा अपनी साड़ी के पल्लू से पोंछना, ये सारे दृश्य सुंदर, स्वाभाविक और कमाल बन पड़े हैं।

पूरे गाने में दोनों कलाकारों का उत्साह देखते ही बनता है। बालमन जिस तरह बिंदासपन के साथ बारिश में उछलता-कूदता है, बिल्कुल वही उमंग, उत्साह, उल्लास, ऊर्जा दिखती है दोनों में। गोथिक शैली की ब्रिटिशकालीन बड़ी-बड़ी इमारतों के सामने, नारियल के पेड़ों के पास खुले मैदान के गड्ढों में भरे पानी को पूरे जोश-जुनून के साथ पैरों से छपाक मारना, अमिताभ-मौसमी का मासूम अल्हड़पन, ...गाने का एक-एक फ्रेम, एक-एक दृश्य बेहद खूबसूरत बन पड़ा है। *

आकाशवाणी सार्वजनिक क्षेत्र की रेडियो प्रसारण सेवा है, जो लगभग एक सदी से ज्ञान, सूचना और मनोरंजन का साधन बना हुआ है। आगामी 23 जुलाई को आकाशवाणी के स्थापना दिवस पर इसकी अब तक की यात्रा पर एक नजर।

अतीत से अब तक बरकरार आकाशवाणी की महत्ता

जानकारी

पूनम पांडे

आज आभासी दुनिया और तकनीक से सब कुछ जान लेने वाली पीढ़ी को अगर साढ़े चार दशक पहले के भारत की यह खास बात बताई जाए कि आकाशवाणी जीवन का एक अटूट हिस्सा हुआ करता था तो शायद वो एकदम से यकीन न करे। पर यही तब के समय का सच था।

आकाशवाणी की शुरुआत

आकाशवाणी की स्थापना 23 जुलाई 1927 को की गई थी। उस समय इस सेवा का नाम भारतीय प्रसारण सेवा (इंडियन ब्रॉडकास्टिंग कॉरपोरेशन) रखा गया था। तब देश में रेडियो प्रसारण की शुरुआत मुंबई और कोलकाता में दो निजी ट्रांसमीटरों से की गई थी। 1930 में इसका राष्ट्रीयकरण हुआ। 1936 में इसका नाम ऑल इंडिया रेडियो रखा गया और 1957 में इसे आकाशवाणी नाम दिया गया।

जागरूकता फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका

उस दौर में भारत में साक्षरता दर बहुत कम थी। वे दुनिया की दौड़ में बहुत पीछे थे। आकाशवाणी के माध्यम से बड़े ही सरल ढंग से आम बोल-चाल की भाषा में विभिन्न प्रकार की जानकारियां आम लोगों तक उपलब्ध कराई जाती थी। दूर-दराज के ग्रामीण इलाके में लोगों से जुड़कर और उनको जागरूक करने में रेडियो पर प्रसारित होने वाले आकाशवाणी के कार्यक्रमों की महत्वपूर्ण भूमिका रही। भारत के राष्ट्रीय प्रसारक के रूप में, ऑल इंडिया रेडियो (एआईआर) यानी आकाशवाणी आज भी जनता को मनोरंजन, सूचना एवं ज्ञानपरक सेवाएं दे रहा है। आकाशवाणी शुरुआत से ही अपने आदर्श वाक्य 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय' का अनुसरण कर रहा है।

आकाशवाणी का व्यापक नेटवर्क

अपनी स्थापना के बाद से धीरे-धीरे आकाशवाणी के नेटवर्क का विस्तार होता गया। आज आकाशवाणी का तेइस भाषाओं और एक सौ छियालीस बोलियों में प्रसारण होता है। आकाशवाणी का व्यापक नेटवर्क देश की लगभग पूरी आबादी एवं क्षेत्र को कवर करता है।

हर तरह का मनोरंजन

आकाशवाणी समस्त भाषायी प्रदेशों की जनता के लिए गीत-संगीत, नाटक, गोष्ठियां, वार्ताएं, रूपकों, संस्मरणों आदि मनोरंजक कार्यक्रमों का प्रसारण करता है। इसके अलावा आकाशवाणी की विविध भारती सेवा फिल्मी गीतों को समर्पित होती है। आकाशवाणी पर समस्त कार्यक्रमों का लगभग पचास प्रतिशत समय मनोरंजन परक कार्यक्रमों के लिए होता है।

सूचना, शिक्षा एवं ज्ञान भी

आकाशवाणी पर हर एक घंटे पर मुख्य समाचार प्रसारित किए जाते हैं। इसके अलावा प्रातःकाल और सायंकाल में 15 मिनट की अवधि का समाचार बुलेटिन प्रसारित होता है। यह समाचार बुलेटिन हिंदी और अंग्रेजी भाषा में प्रसारित किया जाता है। बुलेटिन को इस तरह से तैयार किया जाता है कि श्रोता को उसे समझने के लिए किसी भी शब्दकोश का सहारा न लेना पड़े। आकाशवाणी पर श्रोताओं के विभिन्न समस्याओं को लेकर वार्ताएं भी प्रस्तुत की जाती हैं। अनुसंधानों के परिणामों, अभिभाषणों की कार्यवाही को लिपिबद्ध करके प्रस्तुत किया जाता है। इसके अंतर्गत कृषि, विज्ञान संबंधी शिक्षा देना भी शामिल होता है। आकाशवाणी के माध्यम से स्कूल तथा कॉलेज की कक्षाओं के लिए रेडियो द्वारा पाठ्य विषयों पर चर्चाएं भी प्रसारित की जाती हैं।

कायम है प्रासंगिकता

देखा जाए तो आज भी रेडियो और आकाशवाणी जनसंचार का सशक्त माध्यम बना हुआ है। इसने गांव-गांव तक ज्ञान की चेतना को पहुंचाने का अविस्मरणीय कार्य किया है। हालांकि आज संचार के विविध माध्यम, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स और हर हाथ में मोबाइल की पहुंच ने रेडियो और आकाशवाणी के अस्तित्व को चुनौती अवश्य दी है, लेकिन इसकी कुछ अनूठी विशेषताओं के कारण आज भी इसकी लोकप्रियता, उपयोगिता एवं प्रासंगिकता बनी हुई है। *

खान-पान

चेतना झा

बारिश का मौसम और पकौड़े का कनेक्शन तो आप जानते ही हैं! लेकिन यहां हम आपको देश के अलग-अलग हिस्सों में खाए जाने वाले कुछ जायकेदार मानसूनी व्यंजनों के बारे में बता रहे हैं, जिनका स्वाद आप कभी भुला नहीं पाएंगे।

जायकेदार मानसूनी व्यंजनों का स्वाद

लाजवाब राजस्थानी दाल-बाटी-चूरमा: राजस्थान की धरती पर बारिश की बूंदें स्वाद की नई बयार भी लेकर आती हैं। बारिश हुई नहीं कि गोठ के प्रोग्राम बनने लगते हैं। गोठ यानी, प्रकृति के करीब या पार्कों में जाकर सामूहिक पिकनिक मनाना। अपनों के साथ खुले सुखद परिवेश में दाल-बाटी चूरमे का रसास्वादन सबसे ज्यादा चलन में है। सावन के महीने में तीज और राखी जैसे पर्व पर यहां की फिजा में घेवर की खुशबू भी घुल-मिल जाती है। घेवर में स्वाद की इतनी विविधता मिलती है कि आप चखते जाएंगे पर इसका अंत नहीं होगा। मेवाड़ क्षेत्र में घूमिए तो

दाल-बाटी-चूरमा

गली-गली से उठती पकौड़े, मालपूए की सुगंध भूख बढ़ा देती है। इसके साथ ही भुट्टे की सब्जी के साथ घी चुपड़ी रोटी का स्वाद कभी नहीं भुला पाएंगे।

यूपी में अंगीठी वाली मीठी रोटी: अब बात यूपी की अंगीठी वाली मीठी रोटी, अरबी के पत्ते के पकौड़े, अगस्त्य के फूल के पकौड़े की। भिगोकर पीसी गई उड़द और चने की दाल को हरी मिर्च, धनिया, अदरक डाल कर भून देते हैं, फिर धो-सुखा कर, अरबी के पत्तों पर इन्हें लपेट कर स्टीम देते हैं। इसके बाद बनती है इनकी पकौड़ी। लंबी प्रक्रिया है लेकिन बरसात आते ही घर-घर में इसे बनाया और चाव से खाया जाता है।

झारखंड में धुसका-बर्रा: 'धुसका बर्रा खाएंगे, झारखंड में बस जाएंगे...' इस गाने की पंक्तियों की तरह ही हिट है झारखंड का धुसका-बर्रा। सच है, बारिश के दिनों में झारखंड की हरी-भरी धरती पर धुसका खाने के बाद किसी का भी दिल यहां बस जाने को करेगा। बराबर की मात्रा में चना दाल और अरवा चावल को भिगोकर उसमें जीरा, मिर्च आदि मसाले मिलाकर पीसा जाता है फिर तुरंत ही तल कर बनाते हैं धुसका। आलू की खट्टी-मीठी सब्जी के साथ इसका लुत्फ उठाया जाता है। इनके अलावा यहां रूगड़ा भी इस मौसम में खूब

अगस्त्य के फूल के पकौड़े

धुसका-बर्रा

चाव से खाया जाता है। इसे 'शाकाहारी मटन' भी कहा जाता है।

एमपी में दाल-बाफला: पश्चिमी मध्य प्रदेश का एक बड़ा हिस्सा है मालवा। यहां बारिश की बूंदें दाल-बाफला का संदेश लेकर आती हैं। बाफला यानी आटे की बाटी को कंडे की आग में पका कर तैयार किए गए सोंधे-सोंधे बड़े। पकाने के बाद इन बड़ों से राख झाड़ कर घी की कटोरी में डुबो देते हैं, फिर खट्टी-मिठ्ठी दाल के साथ इसका स्वाद लिया जाता है। *

बिहार की कचरी-मूरही और लिट्टी-चोखा

बिहार में बारिश होते ही लिट्टी और बैंगन के चोखे के अलावा कचरी-मूरही की तलब जगने लगती है। कचरी यानी लच्छे में कटे प्याज में कटी हरी मिर्च, लहसुन, अदरक, बैंगन, फूलगोभी और मसाले डाल कर बेसन के घोल में लपेट कर तैयार पकौड़े। मूरही यानी पफ्ड राइस या मुरमुरे। बारिश में गरमा-गरम कचरी के साथ मूरही का स्वाद भुलाया नहीं जा सकता है।

लिट्टी के लिए चने के सत्तू में बारीक कटी हरी मिर्च, धनिया पत्ती, अदरक, लहसुन, नीबू का रस, अजवाइन, कलौंजी, नमक और कुछ बूंदें सरसों के तेल डाल कर मिश्रण तैयार किया जाता है। गूंथे आटे की गोली में यह मिश्रण डाल कर गोइठे या कोयले की आग में पकाया जाता है। फिर इसी आंच पर बैंगन को भून कर चोखा तैयार किया जाता है। इसका स्वाद एक बार अगर जुबान पर चढ़ गया तो यकीन मानिए, इसे बार-बार खाने का जी करेगा।